5 साल बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक
कुमावत इंडिया
कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-6 | अंक-12 जुलाई-2023 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

HAPPY
Haryali Teej

स्व. विनोद बालोदिया
9829059312

चेतन बालोदिया
9414052736

सुनील बालोदिया
9928910068

रवि बालोदिया
9829436551

A COMPLETE PRINTING SOLUTION

Raj Blocks

Since-1977

OFFSET PRINTERS

• Books • Magazine • Brochures • Catalogue • Flex, Vinayle • Envelops • Letter Head
• Event Tickets • Certificates • Invitation Card • Menu Card • Poster • Calender
• Packazing Box • UV & Leaf with Special Effects

B-81, Road No.4, 22 Godown Industrial Area,
Kartarpura, Jaipur, 0141 - 4022538
rajblocks@yahoo.com | rajblocksjpr@gmail.com
rajprintlinejpr@gmail.com | rajprintlinejpr@yahoo.co.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

अध्यक्ष	:	रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
		सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		हेमचन्द खड़गटा	मो. 9351682036
		रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
		जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
		मोहन लाल कुमावत	मो. 9887557425
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) सम्पादक - 9414074376, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, गौरव अजमेरा 9829488824, प्रमोद कुण्डलवाल 9414362169, मनीष कुमावत 9660702083, रमेश तोंदवाल 9460870125 रवि कुमावत **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, प्रभुदयाल तुनगरिया किशनगढ़ 9680931428, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया तथा मुकेश कारगवाल 9828606056, राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402 सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493 किशनगढ़ :** नन्दकिशोर पारमवाल **मो. 9667090499 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित सम्पादक राम प्रकाश कुमावत (मारवाल)

सम्पादकीय

मन प्रत्यक्ष देवता व कल्पवृक्ष है। यदि इसके सदुपयोग से व्यक्ति को मनचाहा फल प्राप्त हो सकता है। लेकिन मन साथ न दे व बिगड़ जाए या इसका दुरुपयोग होने लगे तो यही मन बर्बादी का कारण बनता है। मन ठीक है, तो शेष सब ठीक है, यदि मन बिगड जाए तो यह, व्यक्ति का सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है तथा व्यक्ति जीती हुई बाजी हार जाता है। मन की तीन शक्तियां हैं: कल्पना शक्ति, मनोबल और इच्छाशक्ति। इन तीनों शक्तियों के बल पर मनुष्य के लिए असंभव जैसा कुछ नहीं रहता। यदि मन की शक्तियां विषयभोग व राग-द्वेष में उलझ जाए तो जीवन को दु:खमय व संताप त्रस्त बना देती है।

भारत में ब्रिटिश शासन में 200 साल के उत्पीड़न से जिन महापुरुषों ने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु कार्य किया उनकी जीवनियों से ज्ञात होता है कि उनमें से अधिकांश की परिस्थितियां, साधन व योग्यता आदि औसत स्तर की थी लेकिन उनमें 'असीम मनोबल' था। उन्होंने मन की शक्ति को पहचाना व इसी आधार पर महान कार्य करते हुए, देश के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर देश को आजादी दिलवाई, उन सभी को शत् शत् नमन। आज हम उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। इन्हीं के कारण हम भारतवासी 15 अगस्त 2023 को 76वां स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाएंगे। यह सब मन की अद्भुत शक्तियों का ही परिणाम है। अपने देश, समाज और परिवार के लिए हम सभी को विचारों व भावनाओं पर अनुशासन व संयम द्वारा अपने अपने मन का सदुपयोग कर, परिवार, समाज और देश की सेवा करनी होगी।

आज हमारे समाज में नए-नए विकार व समस्याओं का दौर चल रहा है जैसे घर-घर में कलह, संयुक्त परिवारों का टूटना, युवाओं में सामन्जस्य व सौहार्द का अभाव, शादी की औसत आयु बढ़ना, लाडलियों और लाडलों हेतु रिश्ते तय होने में समस्या, शादियों का टूटना आदि। इन सभी का मूल कारण है 'मन पर संयम नहीं' रखना। सारी कठिनाई बिगड़ैल मन तथा संस्कारहीनता की है, जो आत्मा और परमात्मा के बीच में चट्टान बनकर अडें हुए हैं। यदि अपनी अकड़ से पीछे हट जाएं, तो समझो सारी समस्याओं का अंत हो गया। मन के काबू में आते ही सारी सिद्धियां अपने आप ही मुट्ठी में आ जाती है। इस तरह सधा हुआ मन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष की तरह हैं जिसकी छांव में हमारे परिवार को सुख शांति और असीम लाभ प्राप्त हो सकते है, स्वास्थ्य और परमार्थ के साथ रह सकते हैं, लौकिक सुख और पारलौकिक शांति की कुंजी मुट्ठी में आ सकती है, पर यदि मन को नहीं साधा गया तो वह शैतान की भांती हमारे सिर पर सवार होकर हमें सन्मार्ग से भटका सकता है। यदि हम अपने मन को वश में नहीं करते तो उसके वश में होना हमारी नियति बन जाती है। अर्थात मन का संयम अनेक समस्याओं का समाधान है इसे नियन्त्रित करने का अभ्यास करे, इससे धीरे-धीरे मन को साधने में सफल हो सकते है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार की ओर से आप सभी को 76वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामना।

- रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
कुमावत गौरव : श्री सुभाष कुमावत (मारोठिया)	5
कांग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए	5
स्मृति शेष : श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा (खड़गटा)	6
स्मृति शेष : श्री चिरंजीलाल कुमावत (मारवाल)	6
'25वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 का लोगो 'भगवान हनुमान'	7
सर्वसमाज नि:शुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन	7
समाचार : गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया	7
छात्रावास हेतु भूमि आवंटन के लिए आवेदन पत्र दिया	7
शिक्षाविद् आर के वर्मा की समाज की प्रशासनिक भागीदारी बढ़ाने पर चर्चा	8
रक्तदान शिविर	8
अल्टीमेट स्पोटर्स एकेडमी द्वारा आयोजित रैकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप	8
राजस्थान कुमावत क्षत्रिय समाज इंदौर : होनहार प्रतिभाओं का सम्मान	8
रेलवे पर 12 हजार रुपये का हर्जाना	9
भरण-पोषण 55 हजार रुपए सिक्को के बजाए कागजी मुद्रा में देने के आदेश	9
चौमूं में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजन होगा	9
विभिन्न संस्थानों में नई भर्तियों हेतु आवेदन आमंत्रित	9
लेख : असफलताओं से विचलित न हों	10
रसोई से: स्वादिस्ट छोले-भटूरें	10
लेख : गायत्री गीता	11
लेख : आधुनिकता की दौड़ में संस्कृति से अलग होती युवा पीढ़ी	12
लेख : धर्म और महाभारत	13
लेख : हिन्दू मान्यता- अधिक मास	14
आओ संस्कृत सीखे	14
लेख : ऐसी आत्मनिर्भरता कितनी उचित है ?	15
गन्तव्य तक नहीं पहुंचाने पर ट्रैवल्स पर 25,000 हर्जाना	15
एडवोकेट लांबा प्रदेश स्तरीय सूचना संकलन समिति के सदस्य	15
राष्ट्रगान 'जन गण मन' के बारे में जानकारी	16
लेख : भारत विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस : 14 अगस्त	16
कानून की जानकारी :सम्पत्ति को विवादों से बचायें : जीते जी करें वसीयत	17
लेख : प्रजापालक ! आप सच्चे कर्मयोगी हैं	17
लेख : वास्तु दोष और रोग	18
व्यंग्य : मारवाड़ का मूल धन है 'काचरी'	19
मुकेश कुमावत नर्मदा में डूबे	20
अमेरिका में 10 हजार लोगों ने किया गीता पाठ	20
बाबा रामदेव मंदिर के मुख्य द्वार का डिजाइन बनाया	20
गुमनाम क्रांतिकारी : नीरा आर्य, खुदीराम बोस	20
लेख : शिव की महिमा	21
लेख : कारगिल विजय दिवस - 26 जुलाई	22
श्री क्षत्रिय कुमावत समाज विवाह समिति के चुनाव सम्पन्न	23
विशिष्ठ संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
आवश्यक सूचनाएं व पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क सूत्र	26
भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश मंत्री डॉ. महेन्द्र कुमावत का भव्य स्वागत	27
CA, NEET तथा बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण मेधावी विद्यार्थी	28
पीएचडी की उपाधि दी गई	28
सालासर में हनुमान जी की मूर्ति स्थापित	29
श्रद्धांजलि श्री चिरंजीलाल मारवाल	29
विज्ञापन	3, 27, 30

श्री सुभाष कुमावत (मारोठिया)

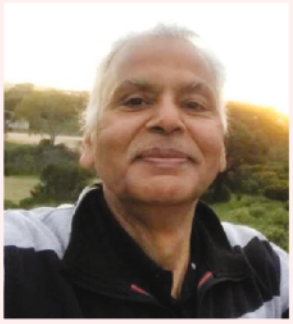

शिक्षक श्री भैंरूलाल कुमावत (मारोठिया) अजीतगढ़ (अमरसर) सीकर के घर में 1 सितम्बर, 1951 को एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ, जिसका नाम रखा **सुभाष**। श्री सुभाष के गुणों को इनकी माता श्रीमती मन्नी देवी तथा पिता ने बचपन में ही पहचान लिया तथा उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने का मन बना लिया था। इन्होंने प्राथमिक शिक्षा अजीतगढ़ से ली तथा कक्षा 9 से 11 तक अमरसर से विज्ञान की पढ़ाई की। इसके बाद आपने जयपुर आकर महाराजा कॉलेज से B.Sc. तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से LLB की।

आपने अपना कैरियर वर्ष 1972 में विज्ञान शिक्षण से प्रारम्भ किया। आप खाद्य विभाग राजस्थान में प्रवर्तन अधिकारी के रूप में चयनित हुए तथा जिला रसद अधिकारी जैसे महत्वपूर्ण पद से वर्ष 2011 में सेवानिवृत्त हुए। राज्य सेवा के दौरान आप एक ईमानदार व कर्मठ अधिकारी के रूप में विख्यात रहे। इनके भाई श्री शंकर लाल प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, श्री नरेन्द्र व्याख्याता तथा श्री प्रभुदयाल वाणिज्यिक कर अधिकारी रहे हैं। आपका विवाह वर्ष 1975 में रेलवे में इंजीनियर श्री मूलचन्द फुलेरा वालों की पुत्री सुमनलता विदुषी महिला से हुआ। इस शिक्षित दम्पत्ति ने शिक्षा के महत्व को भलीभांती समझा। इनके पुत्र श्री भूपेन्द्र कुमावत नाबार्ड भोपाल में Dy. GM हैं तथा पुत्री श्रीमती नीलम एडीलेड (साउथ आस्ट्रेलिया) में उच्च अधिकारी है व इनके दामाद श्री दीपेन्द्र कुमावत एडीलेड (साउथ आस्ट्रेलिया) में BHP लिमिटेड में वित्तीय नियंत्रक है।

ये समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा ग्रहण करके नौकरी या व्यवसाय करने की सलाह देते रहे हैं।

श्री सुभाष कुमावत सामाजिक गतिविधियों में संलग्न रहे हैं तथा सामाजिक संस्थाओं को आर्थिक योगदान देते रहे हैं। आप स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हैं, शुद्ध शाकाहारी हैं, लगभग 50 वर्षों से चाय तथा किसी प्रकार के व्यसन से दूर हैं। आप प्रात: नियमित भ्रमण करते हैं। दूसरों को भी कहते हैं कि अच्छा स्वास्थ्य ही हमारी पूंजी है। साहित्यिक प्रवृत्ति को लाईफ स्टाइल का अभिन्न अंग बनाया है। इनकी रुचि कविताएं तथा आर्टिकल्स लिखने की है। आपने 25 से अधिक देशों की यात्राएं की हैं वहां से अनेक प्रकार के अनुभव लिए हैं तथा विदेशी लोगों को भारत घूमने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

कुमावत बंधु कांग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के संगठन महासचिव के पद पर श्री ललित तूनवाल की नियुक्ति की गई है, ये पहले कार्यालय सचिव के पद पर कार्यरत थे। मृदु स्वभाव के धनी श्री ललित तूनवाल वर्तमान में चौमूं विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इन्हें कांग्रेस की प्रदेश चुनाव कमेटी का सदस्य बनाकर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी है।

श्री मुकेश वर्मा को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में पुन: सचिव बनाया गया है। ये समाज के युवा नेता हैं, कांग्रेस से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं तथा झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

श्री सुरेन्द्र लाम्बा एडवोकेट राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर को, जो युवा एवं स्पष्टवादी कांग्रेसी नेता हैं, कांग्रेस से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं तथा श्री सचिन पायलट के काफी नजदीक हैं। को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में पुन: सचिव बनाया गया है।

श्री अरुण कुमावत कांग्रेस के विश्वसनीय नेता हैं तथा लम्बे समय से कांग्रेस को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इन्हें प्रदेश कांग्रेस कमेटी का सचिव बनाया गया है।

कांग्रेस प्रदेश कार्यकारिणी में संगठन सचिव पद पर तथा सचिव पद पर नियुक्ति दिए जाने पर कुमावत समाज में प्रसन्नता है। कुमावत समाज ने कांग्रेस संगठन का आभार व्यक्त किया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से श्री ललित तूनवाल, श्री मुकेश वर्मा, श्री सुरेन्द्र लाम्बा एडवोकेट तथा श्री अरुण कुमावत को कांग्रेस के संगठन में स्थान मिलने पर हार्दिक बधाई।

लोकेश कुमावत हेड साहब, साइबर सेल राजस्थान पुलिस, जयपुर कमिश्नरेट को डीजीपी डिस्क पुरस्कार मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

श्री चन्द्र प्रकाश जी वर्मा (खड़गटा)

स्वाभिमानी, दृढ निश्चयी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी श्री चन्द्रप्रकाश जी वर्मा (खड़गटा) निवासी 25, जय जवान कालोनी तृतीय, जे एल एन मार्ग, जयपुर, खानदान के सबसे वरिष्ठ सदस्य थे। इनका जन्म 7 जुलाई 1942 को हुआ था। इनके कैरियर का सफर जयपुर मेटल्स से शुरु होकर मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज (MNIT) में 38 वर्ष तक अपनी सेवाएँ देकर पूर्ण हुआ। वहाँ इन्हें एक व्यवहार कुशल और मदद करने वाले व्यक्ति के रूप में जाना जाता था।

श्री मिलापचंद जी के चारों पुत्रों और दो पुत्रियों में सबसे ज्येष्ठ श्री चन्द्रप्रकाश जी के स्वभाव में नेतृत्व क्षमता और परिपक्वता शुरू से ही थी। आपने सदैव अपने परिवार को सही दिशा दिखलाई।

परिवार ही नहीं उन्होंने समाज के लिए भी कुछ नए मापदंड स्थापित किए जैसे भात व पहरावनी नहीं लेना तथा दहेज कम से कम लेना आदि। आपने समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। आप कुमावत समाज मालवीय नगर के प्रतिष्ठित सदस्य रहे तथा समय-समय पर समाज को आगे बढकर आर्थिक सहयोग देते रहे।

वे स्वयं मितभाषी और अनुशासन प्रिय थे तथा अपना काम स्वयं करने में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपनी संतानों का पालन-पोषण एक मर्यादित वातावरण में किया। उसी का परिणाम है कि आज उनके दोनों पुत्र और पुत्री अपने जीवन में सफल और सुस्थापित हैं। पुत्र हीं नहीं उन्होंने अपनी पुत्रवधुओं को भी सदैव अध्ययन और कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

आत्मीयता और अपनेपन की तो ये मिसाल थे। सबको मनुहार करके भोजन करवाना उन्हें बेहद पसंद था।

श्री चन्द्रप्रकाश जी वर्मा के व्यक्तित्व का अद्भुत गुण उनकी न्यायप्रियता थी। वे सही को सही और गलत को गलत कहने का साहस रखते थे। ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व के धनी श्री चन्द्र प्रकाश जी वर्मा का 6 जुलाई 2023 को हम सभी को छोड़कर जाना एक युग का अन्त है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार उन्हें सादर नमन करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हैं।

श्री चिरंजीलाल कुमावत (मारवाल)

20 अगस्त 1944 को जयपुर में श्री जोधराज जी चित्रकार (मारवाल) के यहां श्रीमती चम्पादेवी की कोख से जन्मे श्री चिरंजीलाल बाल्यकाल से ही हँसमुख स्वभाव, मेहनती, धैर्यवान, सरल स्वभाव एवं संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे। अपने परिवार में सबसे बड़े होने के नाते घर के विभिन्न कार्यों को जिम्मेदारी से सम्पन्न करते थे। प्रारम्भ से ही बहुत सी जिम्मेदारियां थीं। उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने परिवार का भी बहुत ध्यान रखा। श्री चिरंजीलाल जी मालवीय रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज में (MNIT) वरिष्ठ प्रारूपकार के पद पर कार्यरत थे। सेवाकाल के दौरान अपने साथियों व भाइयों को उनके अधिकार दिलाने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी सक्रिय रूप से संगठन से जुड़े रहे हैं। श्री चिरंजीलाल जी अपने संघर्षपूर्ण सेवाकाल के साथ ही साथ समाजसेवा के कार्यों में भी सक्रिय रहे।

ये लम्बे समय तक कुमावत क्षत्रिय महासभा जयपुर, सामुहिक विवाह समिति कुमावत स्मारिका, कुमावत समाज की पत्रिका से जुड़कर सामाजिक सेवाएं दी। प्रथम कुमावत सामुहिक विवाह सम्मेलन में ये कोषाध्यक्ष के पद पर अपनी सेवाएं देते हुए समिति के सदस्यों से निरन्तर व्यक्तिगत सम्पर्क बनाए रखा। वर्ष 1996 में कुमावत विकास समिति, मालवीय नगर के गठन में श्री गोविन्द सिंह खोवाल, श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल एवं श्री रामपाल मारवाल के साथ अहम भूमिका निभाई। समिति की विभिन्न गतिविधियों तथा जनगणना कार्य, परिचय पत्रिका प्रकाशन, सामूहिक गोठ, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाकर सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया। कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर को भवन हेतु भूमि आवंटन करवाने में इनकी प्रतिबद्धता एवं अग्रणी भूमिका सभी को याद रहेगी। भूमि आवंटन के पश्चात भवन निर्माण हेतु अन्य पदाधिकारियों के साथ जन सम्पर्क कर लाखों रुपये का सहयोग प्राप्त किया तथा आप द्वारा भी हुआ। जिसके फलस्वरूप भवन निर्माण प्रारम्भ हुआ एवं अनवरत चलता रहा। आप समिति को अपना मार्गदर्शन देते रहे।

श्री चिरंजीलाल कुमावत जी समाज में 'कुमावत इंडिया' पत्रिका से प्रारम्भ से ही जुड़ गए थे। पत्रिका के सदस्य बनाने आदि कार्यों में दिए गए सहयोग को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार कभी भूला नहीं सकता।

... शेष पृष्ठ 11 पर

'25वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 का लोगो 'भगवान हनुमान'

12-16 जुलाई 2023 तक थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में 25वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 शुरू हुई। इस चैंपियनशिप के दौरान एशियाई एथलेटिक्स एसोसिएशन की 50वीं वर्षगांठ मनाई गयी।

इस साल की एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के आधिकारिक शुभंकर के रूप में पूज्य हिंदू देवता और भगवान शिव के अवतार **भगवान हनुमान** को चुना गया है। एशियाई एथलेटिक्स एसोसिएशन ने भगवान हनुमान को खेलों के आधिकारिक शुभंकर के रूप में चुनने के पीछे का कारण महाद्वीपीय संस्था ने वेबसाइट में बताया कि हनुमान (भगवान) राम की सेवा में गति, शक्ति, साहस और बुद्धि सहित असाधारण क्षमता उनकी अविश्वसनीय रूप से दृढ़ निष्ठा और भक्ति है। खेल निकाय के अनुसार, शुभंकर के रूप में भगवान हनुमान भाग लेने वाले एथलीटों के कौशल, समर्पण और टीम वर्क जैसे विभिन्न आवश्यक गुणों का प्रतीक हैं।

वेबसाइट में आगे कहा गया है, '25वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 का लोगो खेलों में भाग लेने वाले एथलीटों, कौशल, एथलीटों की टीम वर्क, एथलेटिकिज्म, समर्पण और खेल कौशल के प्रदर्शन को दर्शाता है।'

वाल्मिकी द्वारा लिखित भारतीय महाकाव्य रामायण दक्षिण पूर्व एशियाई के कई देशों में व्यापक रूप से लोकप्रिय है। थाईलैंड सहित इस क्षेत्र की संस्कृतियों पर हिंदू धर्म का प्रभाव रहा है। **रामकियेन** भारतीय महान योद्धा राजा राम का थाई संस्करण है।

23 स्पर्धाओं में लगभग नौ टीमों ने हिस्सा लिया है। हांगकांग, जापान, भारत, कोरिया गणराज्य, फिलीपींस, मलेशिया, इंडोनेशिया, चीन और सिंगापुर चैंपियनशिप में भाग लेने वाले देश हैं।

चतुर्थ सर्वसमाज नि:शुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर में 27 जून, 2023 को मानव कल्याण सेवा संस्थान 197, एकता नगर-सी, अजमेर रोड, धावास के श्री अमरचन्द कुमावत द्वारा 9 जोड़ों का विवाह सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर प्रथम प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ जिसमें 10वीं व 12वीं कक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 436 प्रतिभाओं को स्मृति चिह्न एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

श्री अमर चन्द कुमावत द्वारा 5वाँ सर्वसमाज नि:शुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन 23 नवम्बर, 2023 देवउठनी ग्यारस को आयोजित किए जाने की घोषणा की गई है।

गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया

बजरंग ज्योतिष कार्यालय, नंदपुरी सोडाला, जयपुर में गुरु पूर्णिमा पर्व का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य लोकेश कुमावत ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', 'पौधे लगाओ' और 'दहेज प्रथा हटाओ।' का संकल्प दिलाया। शिष्यों ने गुरु पूजन किया तथा आचार्य लोकेश ने शिष्यों को गुरु मंत्र सुनाए एवं उपहार भेंट किए।

कुमावत शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा छात्रावास हेतु भूमि आवंटन हेतु आवेदन पत्र दिया

जयपुर में कुमावत समाज के छात्रावास निर्माण हेतु कुमावत शिक्षा कोष ट्रस्ट की ओर से सर्वश्री मुकेश वर्मा (पीसीसी सदस्य), एस.एन. कुमावत एडवोकेट, छोटूराम बड़ीवाल, गौरीशंकर मारवाल (उत्तरी-पूर्वी जोन अध्यक्ष) तथा मंगलचन्द कुमावत आर्किटेक्ट, जयपुर विकास प्राधिकरण आयुक्त श्री जोगाराम से मिलकर छात्रावास हेतु भूमि आवंटित करने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। आयुक्त जेडीए द्वारा प्रार्थना पत्र स्वीकार कर सकारात्मक आश्वासन दिया गया।

शिक्षाविद् आर के वर्मा की समाज की प्रशासनिक भागीदारी बढ़ाने पर चर्चा

देश की ख्याति प्राप्त शिक्षण संस्थान डीएवी के राष्ट्रीय चैयरमेन पद्मश्री डॉ. पुनम सुरी से डी ए वी स्कूल जयपुर की बैठक पश्चात मिलने व शैक्षिक जगत के मुद्दो पर चर्चा का सोभाग्य मिला। देश की नामी संस्था के सुप्रिमों से श्री आर के वर्मा, हनुमानगढ से प्रगाढ़ सम्बन्धों को जानकर बेहद प्रसन्नता हुई।

इसके साथ ही वर्मा जी ने अपने व्यस्त होते हुए भी समय निकालकर हमारे समाज की प्रशासनिक भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से कुमावत स्कूल, सोडाला जयपुर में पधार कर संस्था के सचिव श्री बाबूलाल कुमावत के साथ करीब 3 घंटे विस्तार से चर्चा की व राजधानी मुख्यालय, जयपुर में इस हेतु कार्य करने की महत्ति आवश्यकता जताई। इस पर सचिव महोदय में अपनी सहमति जताते हुए इस पर अत्ति शीघ्र कार्य करने व वर्मा जी द्वारा दिए गये सुझावों को लेकर संस्था की बैठक बुलाकर प्रस्ताव लेने का भरोसा दिलाया।

–सुरेन्द्र लाम्बा एडवोकेट राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर व सदस्य, प्रदेश कांग्रेस कमेटी

स्व. अजय कुमावत के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर आयोजित

7 जुलाई, 2023 को खातीपुरा स्थित 'बिंदास ब्रदर्स ग्रुप' द्वारा 'स्व. श्री अजय कुमावत (खातीपुरा) के जन्मदिवस पर द्वितीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 101 यूनिट रक्तदान हुआ। 'स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक' जयपुर द्वारा रक्त संग्रहण किया गया। केम्प के दौरान बिंदास ब्रदर्स के युवा साथी प्रशांत, नीरज, रोहित, कपिल, अमित, पुलकित, पुनीत, दीपक, मुकेश, राकेश, विनीत, संजय, विजय, दिनेश कुमावत आदि का सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर का आयोजन 23 जुलाई को

जयपुर। स्व. श्री चौगानलाल कुमावत की तीसरी पुण्यतिथि पर स्वामिनी सेवा संस्था द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन बंदडेशवर महादेव मंदिर, कुमावत कॉलोनी, ईएसआई अस्पताल के सामने, कुमावत स्कूल के पीछे, जयपुर पर रखा गया है। स्वामिनी सेवा संस्था के अध्यक्ष अशोक कुमावत ने बताया कि संस्था द्वारा समय-समय पर नि:शुल्क मेडिकल केम्प व रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। संस्था द्वारा 8वां रक्तदान शिविर 23 जुलाई को रखा गया है।

अलटीमेट स्पोटर्स एकेडमी द्वारा आयोजित रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप: 15 जिलों के खिलाडियों ने भाग लिया

प्रथम राजस्थान रैंकिग टेबिल टेनिस चैंपियनशिप का आयोजन सीतापुरा स्थित एक निजी विद्यालय में सम्पन्न हुआ। संचालक जितेन्द्र कुमावत ने बताया कि चैंपियनशिप में 15 जिलों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस दौरान संघ के अध्यक्ष रंजीत मलिक सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

राजस्थान कुमावत क्षत्रिय समाज इंदौर

होनहार प्रतिभाओं का सम्मान

इंदौर के साकेत नगर के कुमावत मांगलिक भवन में कक्षा 8, 10 एवं 12 में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। सबसे अधिक अच्छे अंकों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को 1100 रुपए भेंट कर उत्साहवर्द्धन किया गया। इस अवसर पर योगा में वर्ल्ड रेकॉर्ड धारक नीकिता कुमावत, मार्शल आर्ट प्रज्ञा कुमावत, बैडमिंटन खिलाड़ी देव कुमावत को 1100 रुपए सम्मान राशि देकर सम्मानित किया।

वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया। समारोह में 60 से अधिक प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संरक्षक दिलीपसिंह वर्मा, अध्यक्ष रामचंद भौरोदिया, उपाध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी, कोषाध्यक्ष कुंदरमल जलिन्द्रा, सह कोषाध्यक्ष रामपाल घोड़ेला, सचिव प्रहलाद दम्बिवाल सहित समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। बाहर से पधारे अतिथियों की भोजन व्यवस्था रखी गई।

जागो ग्राहक जागो.....

रेलवे पर 12 हजार रुपये का हर्जाना : राकेश कुमार कुमावत के परिवाद पर दिया निर्णय

जयपुर। रिर्जव सीट पर यात्रा के दौरान सीट किसी अन्य यात्री को देने पर लापरवाही तथा सेवादोष मानते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे पर 12 हजार रुपये का हर्जाना लगाया गया। राकेश कुमार कुमावत के अधिवक्ता राजकुमार कुमावत ने बताया कि परिवादी को परिवार के साथ रामदेवरा से जयपुर आना था। उसने गांधी नगर रेल्वे स्टेशन से ट्रेन के तीन टिकट बुक कराये थे टिकट होने के बावजूद टीटी ने रिर्जव सीट दूसरे यात्री को दे दी।

जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर प्रथम ने ट्रेन में रिजर्व सीट किसी अन्य यात्री को देने पर लापरवाही व सेवादोष मानते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे पर 12 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है तथा निर्देश दिया कि वह टिकट की राशि 285 रुपये परिवाद दायर करने की तारीख 23 अप्रैल 2019 से 9 प्रतिशत ब्याज सहित परिवादी को लौटाये। आयोग के अध्यक्ष सूबेसिंह व सदस्या नीलम शर्मा ने यह आदेश बरकत नगर में रहने वाले राकेश कुमार कुमावत के परिवाद पर दिया।

पत्नी को भरण-पोषण 55 हजार रुपए सिक्को में अदा करने के बजाए कागजी मुद्रा में देने के आदेश

पांच साल पुराने पारिवारीक विवाद के मामले में 55 हजार रुपए भरण-पोषण देने के आदेश फैमिली कोर्ट द्वारा श्री रामप्रकाश कुमावत अधिवक्ता के द्वारा परिवाद पर दिया गया था। पति द्वारा पत्नी को यह भरण-पोषण राशि सिक्को में देने की पेशकश की गई जिसे इनकार करते हुए कागजी मुद्रा में दिलाने की मांग की गई। पत्नी की ओर से अधिवक्ता ने कहा कि 1-2 रुपए के सिक्को में राशि देना जानबूझकर परेशान करने जैसा है।

सिक्का निर्माण अधिनियम 2011 के तहत एक हजार मुल्य से अधिक के सिक्को का लेनदेन वैध नहीं है। परिवार न्यायालय ने पति दशरथ कुमावत को 55 हजार रुपए की भरण-पोषण राशि कागजी मुद्रा में देने का आदेश पारित किया जिसकी पालना नहीं करने पर जेल भेजे जाने हेतु कहा गया।

चौमूं में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित होगा

27 अगस्त, 2023 को चौमूं के गणेश गार्डन, एच.पी. गोदाम के पास पक्का बांधा सामोद रोड में क्षेत्रीय सदस्यों एवं समाजबन्धुओं द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। इसके पोस्टर का विमोचन जगदीश प्रसाद भोड्या पूर्व अध्यक्ष व संयोजक की अध्यक्षता में किया गया।

इस प्रतिभा सम्मान समारोह में कक्षा 10 व 12 में 85% व अधिक तथा स्नातक या स्नातकोत्तर परीक्षा में 70% या अधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी पात्र होंगे। 28 अगस्त, 2022 में सरकारी सेवा में चयनित, खेलकूद एवं अन्य विशिष्ट प्रतियोगिताओं में सफल रहे, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारीगण तथा कुमावत महापंचायत में सहयोग करने वाले भामाशाहों का सम्मान किया जाएगा।

विभिन्न संस्थानों में नई भर्तियों हेतु आवेदन आमंत्रित

संकलनकर्ता **मनीष कुमावत**, सांगानेर

क्र. सं.	विभाग का नाम	पद का नाम	पदों की संख्या	वेतनमान/ लेवल	अधिकतम आयु	योग्यता	अंतिम तिथि	वेबसाईट का पता
1	भारतीय सुरक्षाप्रेस	वेलफेयर ऑफिसर	01	लेवल-5	30	संबंधित डिप्लोमा	16 अगस्त 2023	https://ibpsonline.ibps.in/ispnwojun23/
2	भारतीय सुरक्षाप्रेस	सहायक तकनिशियन	107	लेवल-4	25	संबंधित डिप्लोमा	16 अगस्त 2023	https://ibpsonline.ibps.in/ispnwojun23/
3	राष्ट्रीय पोषणसंस्थान	तकनीकी सहायक	45	लेवल-6	30	संबंधित डिप्लोमा	10 अगस्त 2023	https://www.nin.res.in/
4	राष्ट्रीय पोषणसंस्थान	तकनिशियन	33	लेवल-2	30	संबंधित डिप्लोमा	10 अगस्त 2023	https://www.nin.res.in/
5	राष्ट्रीय पोषणसंस्थान	प्रयोगशाला परिचालक	38	लेवल-1	30	संबंधित में 12वीं	10 अगस्त 2023	https://www.nin.res.in/
6	यूरेनियम कोर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	साइंटिस्ट क	13	लेवल-10	35	संबंधित डिग्री एवं अनुभव	18 अगस्त 2023	https://ucil.gov.in/
7	यूरेनियम कोर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	साइंटिस्ट ख	71	लेवल-9	35	संबंधित डिग्री एवं अनुभव	18 अगस्त 2023	https://ucil.gov.in/
	कुल पद	**308**						**नोट : केवल ऑनलाइन आवेदन मान्य**

असफलताओं से विचलित न हों

'असफलता' के समय दिल छोटा करने और निराश होने की आवश्यकता नहीं है। प्रथम प्रयास अवश्य ही सफल होना चाहिए, यह कोई जरूरी नहीं। संसार में प्रयत्नशील व्यक्ति भी दो तिहाई असफलता और एक तिहाई सफलता का अनुमान लगाकर काम करते हैं। उसी पर संतोष करते और उतना ही पर्याप्त भी मानते हैं। एक परीक्षा में एक बार फेल हो जाना कोई ऐसी विपत्ति नहीं है जिसके लिए अत्यधिक चिंतित और निराश हुआ जाए। अब की बार फेल होने पर दो वर्ष की तैयारी में अच्छा डिवीजन मिल सकता है और आगे की नींव पक्की हो सकती है। जिंदगी इतनी लंबी है कि उसमें दो-चार असफलताओं के लिए भी जगह रखनी पड़ती है।

हर काम में सदा सफलता ही मिलती रहे तब तो मनुष्य, मनुष्य न रहकर देवताओं की श्रेणी में गिना जाने लगे। यह सोचकर परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले अपना साहस समेटकर रह सकते हैं और उस खिन्नता को भुलाकर दोगुणे उत्साह से अगली तैयारी में लग सकते हैं। इस बार नौकरी न मिली, इस जगह पर नियुक्ति न हुई, तरक्की का अबकी बार अवसर न मिला तो आगे मिलेगा। इसमें हतोत्साहित होने की कौन-सी बात है? उन्नति के लिए प्रयत्न करना चाहिए, पर जो परिणाम सामने आवे उसे संतोष और धैर्यपूर्वक हँसते व मुस्कराते हुए शिरोधार्य करना चाहिए।

आर्थिक घाटा हो गया तो हैरानी की क्या बात है? अपने पास यदि क्षमता, प्रतिभा, साहस, पुरुषार्थ और कौशल मौजूद है तो आज न सही चार दिन बाद फिर आवश्यक साधन जुट जाएँगे। न भी जुटे तो थोड़ा स्तर (स्टेण्डर्ड) घटाकर कम खर्च में भी अच्छा-खासा जीवन जीया जा सकता है। गरीब लोग भी तो आनंद और उल्लास की जिंदगी जीते हैं, फिर हम भी वैसा क्यों न कर सकेंगे? खर्चों में कमी करने से गरीबी अखरने वाली नहीं रहती। समय ने हमारी आमदनी पर कुल्हाड़ी चलाई तो हम अपने खर्चों में काट-छाँटकर आसानी से उस असंतुलन को पूरा कर सकते हैं। समय के अनुरूप अपने स्तर को घटा लेने का साहस जिसमें मौजूद है, जिसे हल्के दरजे की मजदूरी में अपना गौरव नष्ट होते नहीं दिखता, उसके लिए घाटे की स्थिति में भी परेशानी का कोई कारण नहीं।

परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल लेने का जीवन विज्ञान जिसने सीखा है उनके लिए अमीरी की तरह गरीबी में भी हँसने और प्रसन्न रहने का कारण मौजूद रहे हैं। जिन्हें श्रम करने में शर्म नहीं आती, जिनने प्रयत्न, पुरुषार्थ, साहस और उल्लास को नहीं खोया है वे आजीविका का उपयुक्त मार्ग आज नहीं तो कल प्राप्त कर लेंगे। गुजरे हुए समय के अनुभव से ज्ञान लेकर वर्तमान की परिस्थितियों को देखते हुए सुखद भविष्य के लिए योजनाएं बनायें।

निर्भय बनें, शांत रहें और सुखी रहें।

- मेघना कुमावत, सिविल लाइन, जयपुर।

स्वादिस्ट छोले-भटूरें

हर वर्ग के लोग स्वादिस्ट छोले और भटूरे खाना पसन्द करते हैं, किन्तु मैदा के बने होने के कारण अधिकांष लोग इन्हें खाना पसन्द नहीं करते है, क्यों कि ये सुपाच्य नही होते है। इस लिए आज आटा और सूजी से भटूरें तैयार करेगें, जो देखने और खाने में एक दम मैदा जैसे स्वादिस्ट लगेगें।

आवश्यक सामग्री (भटूरें)

आटा 100 ग्राम, सूजी 200 ग्राम, दही आधा कप, नमक स्वाद अनुसार, तेल तलने के लिए आधा लीटर, चीनी एक छोटी चम्मच, बेंकिग सोडा आधा चम्मच,

यूँ बनाये भटूरें:-आटा और सूजी को एक छोटी परात में छान ले, फिर इसमें 2-3 चम्मच तेल, बेकिंग सोडा, दही, नमक मिलाकर अच्छी तरह मिलाये, फिर गुनगुने पानी से आटे की तरह इसे गुंथे, इसके बाद इसे 1-2 घण्टे के लिए रख दे, अब कढाई में तेल डालकर गैस पर रखे, गुथे हुये आटे की पूरी की तरह लोई बनाकर बेले और इन्हें कलछी की सहायता से पूरी की तरह ब्राउन होने तक फूलाये और पुरी तरह फूल जाने पर प्लेट में निकाल ले, इन्हें छोले बनाकर गरमा-गरम सर्व करें।

आवश्यक सामग्री (छोले)

छोले, काबुली चना-200 ग्राम, बेंकिग सोडा-आधा छोटी चम्मच,टी-बैग-2,टमाटर-3-4 मीडियम साइज, हरी मिर्च-1-2,अदरक-छोटा टुकडा, रिफाइन्ड तेल-2 टेबिल स्पून, जीरा-आधा छोटी चम्मच, 1पिंच, अनार दाना पाउडर, लाल मिर्च 2 चम्मच, धनीया 2 चम्मच छोटी, एक चौथाई चम्मच गरम मसाला, नमक स्वाद अनुसार, हरा धनीयां बारीक कटा हुआ।

यूँ बनाये मजेदार छोले:- चनों को रात में पानी में भीगों कर रख दीजिये, सुबह पानी से निकाल कर धोकर कूकर में डाल दीजिये, उसमें एक गिलास पानी, बेंकिग सोडा और टी बैग डालकर कूकर बन्द कर सीटी आने तक पकाये, फिर गैस की आंच थोडी धीमी करके 2 मीनिट पकायें, अब गैस बन्द कर दे। टमाटर,हरी मिर्च अदरक को मिक्सी में बारीक पीसे, एक कढाई में तेल गरम करें, जीरा, हींग,अनारदाना पावडर, सब डाल दे, थोडा भुनने के बाद धनीया पाउडर अब पिसे हुये टमाटर,हरी मिर्च, अदरक आदि को इसमें डाले, लाल मिर्च आदि डालकर पकाये, पकने के बाद थोडा पानी डाले,अब कुकर खोलकर, टी बैग हटा दे और चनों को इस मिश्रण में डालकर पकाये, आवष्कता अनुसार पानी डाले, पकने के बाद गरम मसाला और हरा धनीयां मिलाकर गैस से उतार ले, गरमा-गरम भटूरों के साथ खायें।

- राजबाला कुमावत, सांगानेर

गायत्री गीता

वेदमाता गायत्री मंत्र छोटा-सा है। उसमें 24 अक्षर हैं, पर इतने थोड़े में ही अनंत ज्ञान का भण्डार भरा हुआ है। जो ज्ञान गायत्री के गर्भ में है, वह इतना सर्वांगपूर्ण एवं परिमार्जित है कि मनुष्य यदि उसे भली प्रकार समझ ले और अपने जीवन में व्यवहार करे तो उससे लोक-परलोक सब प्रकार से सुख-शांतिमय बन सकते हैं।

आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों ही दृष्टिकोण से गायत्री का संदेश बहुत ही अर्थपूर्ण है। उसे गंभीरतापूर्वक समझा और मनन किया जाए, सद्ज्ञान का अविरल स्रोत प्रस्फुटित होता है। गायत्री गीता के 14 मंत्रों का अर्थ इस प्रकार है—

ॐ—जिसको वेद न्यायकारी, सच्चिदानंद, सर्वेश्वर, समदर्शी नियामक, प्रभु और निराकार कहते हैं, जो विश्व में आत्मा रूप से उस ब्रह्म के समस्त नामों में श्रेष्ठ नाम, पाप-रहित, पवित्र और ध्यान करने योग्य है, वह "ॐ" ही मुख्य नाम माना गया है।

भूः—मुनि लोग प्राण को "भूः" कहते हैं। यह प्राण समस्त प्राणियों में सामान्य रूप से फैला हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि यहाँ सब समान हैं। अतएव सब मनुष्यों और प्रणियों को अपने समान ही देखना चाहिए।

भुवः—संसार में समस्त दुःखों का नाश ही "भुवः" कहलाता है। कर्तव्य-भावना से किया या कार्य ही कर्म कहलाता है। परिणाम में सुख की अभिलाषा को छोड़कर जो कार्य करते हैं, वे मनुष्य सदा प्रसन्न रहते हैं।

सवः—यह शब्द मन की स्थिरता का निर्देश करता है। चंचल मन को सुस्थिर और स्वस्थ रखो, यह उपदेश देता है। सत्य में निमग्न रहो, यह कहता है। इस उपाय से संयमी पुरुष तीनों प्रकार की शांति को प्राप्त करते हैं।

तत्—यह शब्द यह बतलाता है कि इस संसारमें वही बुद्धिमान है, जो जीवन और मरण के रहस्य को जानता है। भय और आसक्ति रहित जीता और अपनी गतिविधियों का निर्माण करता है।

सवितुः—यह पद बतलाता है कि मनुष्य को सूर्य के समान बलवान होना चाहिए और सभी विषय तथा अनुभूतियाँ अपनी आत्मा से ही संबंधित हैं, ऐसा विचार करना चाहिए।

वरेण्यं—यह शब्द प्रकट करता है कि प्रत्येक मनुष्य को नित्य श्रेष्ठता की ओर बढ़ना चाहिए। श्रेष्ठ देखना, श्रेष्ठ चिंतन करना, श्रेष्ठ विचारना, श्रेष्ठ कार्य करना इस प्रकार से मनुष्य को श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

भर्गो—यह पद बताता है कि मनुष्य को निष्पाप बनना चाहिए। पापों से सावधान रहना चाहिए। पापों के दुष्परिणामों को देखकर उनसे घृणा करें और निरंतर उनको नष्ट करने के लिए संघर्ष करता रहे।

देवस्य—यह पद बताता है कि मरणधर्मा मनुष्य भी अमरता अर्थात् देवत्व को प्राप्त कर सकता है। देवताओं के समान शुद्ध दृष्टि रखने से, प्राणियों की सेवा करने से, परामर्थ कर्म करने से, निर्बलों की सहायता करने से मनुष्य के भीतर और बाहर देवलोक की सृष्टि होती है।

धीमहि—इसका का आशय है कि हम सब लोग हृदय में सब प्रकार की पवित्र शक्तियों को धारण करें। वेद कहते हैं कि इसके बिना मनुष्य सुख-शांति को प्राप्त नहीं होता।

धियो—यह पद बतलाता है कि बुद्धिमान को चाहिए कि वह वेद-शास्त्रों को बुद्धि से मथकर मक्खन के समान उत्कृष्ट तत्वों को जाने, क्योंकि शुद्ध बुद्धि से ही सत्य को जाना जाता है।

यो नः—यह पद का तात्पर्य है कि हमारी जो भी शक्तियाँ एवं साधन हैं, चाहे वे न्यून हों अथवा अधिक हां, उनके न्यून से न्यून भाग को ही अपनी आवश्यकता के लिए प्रयोग में जाएँ और शेष को निःस्वार्थ भाव से अशक्त व्यक्तियों को बाँट दें।

प्रचोदयात्—यह पद का अर्थ है कि मनुष्य अपने आपको तथा दूसरों को सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दे। इस प्रकार किए हुए सब कामों को विद्वान लोग धर्म कहते हैं।

जो मनुष्य इस गायत्री गीता को भली प्रकार जान लेता है, वह सब प्रकार के दुःखों से छूटकर सदा आनंदमग्न रहता है।

गायत्री गीता के उपर्युक्त 14 श्लोक समस्त वेद शास्त्रों से भरे हुए ज्ञान का निचोड़ हैं। समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे। समस्त शास्त्ररूपी समुद्र का मंथन करके निकाले गए यह 14 श्लोकरूपी 14 रत्न हैं। जो व्यक्ति इन्हें भली प्रकार हृदयंगम कर लेता है, वह कभी भी दुःखी नहीं रह सकता, उसे सदा आनंद ही आनंद रहेगा।

संकलन : लक्ष्मीनारायण चोड़ीवाल

श्री चिरंजीलाल जी कुमावत ... **पृष्ठ 6 से आगे...**

श्री चिरंजीलाल जी एक कर्मठ एवं कर्मशील व्यक्ति थे। मालवीय रिजनल इंजीनियरिंग कॉलेज (MNIT) में कार्यरत रहते हुए और सेवानिवृत्त होने के बाद भी अपनी सेवाएं देते रहे।

21 जून, 2023 को आपके निधन से समाज ने एक अच्छा, सच्चा समाजसेवी सदा के लिए खो दिया। धर्मपत्नी श्रीमती कैलाश देवी, इनके पुत्र शोभित मारवाल पुत्री श्रीमती सीमा, श्रीमती अनीता, लाडली पुत्री विजयलक्ष्मी एवं अनेक रिश्तेदारों ने भी इन्हें भावभीनी व अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका एवं कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर की ओर से श्रद्धेय श्री चिरंजीलाल जी कुमावत (मारवाल) को सादर श्रद्धांजलि। ये हमारे स्मृति पटल पर सदैव रहेंगे। इनसे प्रेरित होकर हम कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे।

आधुनिकता की दौड़ में संस्कृति से अलग होती युवा पीढ़ी

आज पूरे देश में पाश्चात्य संस्कृति अपनी जड़ें जमा चुकी है। महानगरों या शहरों में ही नहीं बल्कि गांव की गलियों तक में इसका प्रभाव देखा जा सकता हैं। यदि ऐसे ही हालत रहे तो वह दिन दूर नहीं जब लोग वास्तविक भारत को भूल जाएंगे। आधुनिकता की अंधी दौड़ में आदर्शों का पतन हो रहा है। खुद की संस्कृति से समझौता किया जा रहा है और तो और अब लोग खुद को भी भूलने लगे हैं कि किन परंपराओं और संस्कृतियों के साथ उनका लालन-पालन हुआ।

कहा जाता है कि कोई भी पेड़ तब तक ही जीवित रह पाता है, जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। समाज में व्यक्ति की वे जड़ें संस्कृति है, जिससे जुड़ा रहना व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है। संस्कृति से कटा हुआ व्यक्ति कटी डोर की पतंग की भांति होता है, जो उड़ तो रहा होता है लेकिन मंजिल व रास्ता तय नहीं होता, न ही पता होता है कि वह कहां जाएगा।

आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को दिन-प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होती जा रही है। संस्कृति-संस्कार ऐसे अभिन्न अंग हैं जिनसे समाज तय होता है। कहा जाता है कि जिस प्रकार की संस्कृति व संस्कार किसी समाज में प्रचलित होंगे, उसी स्तर का समाज सभ्य माना जाता है। हमारे देश-प्रदेश की संस्कृति व संस्कार वैश्विक मंच पर आदर्श स्थान पर रहे हैं। भारतीय जीवनशैली को विश्व में सबसे श्रेष्ठ व सभ्य माना जाता रहा है। लेकिन समय के चक्र व पाश्चात्य प्रभाव ने हमारी संस्कृति एवं संस्कारों को अत्यधिक हानि पहुंचाई है।

आज अधिकांश लोग संस्कृति व संस्कारों के साथ जीने को पिछड़ापन मानते हैं, लेकिन पिछड़े हुए तो उन्हें कहा जा सकता है जो अपनी संस्कृति व संस्कारों से छिटक कर अपना पाश्चात्यकरण कर चुके हैं। भारत की संस्कृति व सभ्यता का तर्क व वैज्ञानिक आधार रहा है, जिसने पूरे विश्व को जीवन मार्ग पर चलना सिखाया, तभी तो भारत को 'विश्व गुरु' जैसी उपमाओं से अलंकृत किया जाता रहा है। लेकिन वर्तमान में समाज का अधिकांश वर्ग आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपनी संस्कृति व संस्कारों को भुला चुका है। माता-पिता को सम्मान देने की बजाय उन्हें वृद्धाश्रमों में जीवन काटने के लिए या यूं कहें कि मौत के इंतजार के लिए छोड़ दिया जाता है। जिन माता-पिता ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना जीवन कष्टों में काटा, आज उन्हें ही घरों से निकाला जा रहा है।

जहां शादी-विवाह में बेटियों को डोलियों में विदा किया जाता था, आज स्टेज पर ही सारी औपचारिकताएं निभा दी जाती हैं। युवा खेलों को छोड़कर नशे को ही खेल समझ बैठे हैं। अपनी ताकत गलत कार्यों में लगाकर युवा पीढ़ी संस्कृति की जड़ों से कट चुकी है। पहले गुरु-शिष्य के संबंधों की महिमा लोगों की जुबां पर होती थी, आज युवा गुरुओं को सम्मान देने की बजाय कई बार तो सामने आने पर रास्ता बदल लिया करते हैं।

जहां त्यौहारों व रीति-रिवाजों को सामूहिकता व अपनेपन की भावना तथा संस्कृति के एक हिस्से के रूप में मनाया जाता था, समाज में हर्षोल्लास व भातृभाव रहता था, आज उन्हीं त्यौहारों पर बस सोशल मीडिया में बधाई के फोटो डालकर इतिश्री करना व ऐसे अवसरों पर नशा करने का प्रचलन बढ़ गया है, मानो आज के युवाओं को नशे करने के लिए अवसर चाहिए हो। त्यौहारों के अवसर पर जहां लोक संगीत व लोक संस्कृति का परिचय देखने को मिलता था, वहां आज ऊंची आवाज में डी.जे. लगाकर इन त्यौहारों की औपचारिकताएं पूरी होती नजर आती हैं।

हमारी संस्कृति में सहयोग का बड़ा महत्व था, हर सुख-दुःख में साथ खड़े रहने की भावना देखने को मिलती थी, लेकिन आज समाज व लोग व्यक्तिवादी होते जा रहे हैं, केवल अपने में ही समाज को समझते हैं। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त किए लोग समाज में अमानवीय कृत्यों में संलिप्त पाए जाते हैं, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा कितनी भी हासिल कर ली जाए वह शिक्षा अगर आपके व्यवहार में न उतरे तो उसका कोई औचित्य नहीं रह जाता।

आज का मनुष्य निर्भर प्रवृत्ति में इतना लीन हो गया है कि उसे सब कुछ आर्टिफिशियल चाहिए, स्वयं कुछ भी नहीं करना चाहता है। कहा जाता है कि आज के मनुष्य सोशल मीडिया में तो सोशल होना चाहते हैं, मगर सामाजिक नहीं बनना चाहते, केवल नाम से आधुनिकतावादी कहलवाना चाहते हैं। यह आधुनिकतावादी होने का भ्रम लोगों को अपने मस्तिष्क से निकाल कर व्यावहारिक जीवन में चिंतन करके अपनी जड़ों से जुड़कर अपनी संस्कृति व सभ्यता को जानना चाहिए, तभी आधुनिकतावादी कहलाने का भी औचित्य रह पाता है, अन्यथा मानव समाज इतना अधिक व्यक्तिवादी हो रहा है कि लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता कि साथ वाले घर में रह रहे व्यक्ति को क्या समस्या है।

भारत की संस्कृति नमस्ते, वसुधैव कुटुंबकम व स्वागतम की रही है, लेकिन आज इस पहचान को लोग धूमिल करते जा रहे हैं। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ की आंधी में भारतीय समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हो चुका है, नैतिकता का अस्तित्व दूर-दूर तक कहीं भी प्रतीत नहीं होता। बेशक समय के साथ चलना बहुत जरूरी है, मगर हमें इतना तेज भी नहीं चलना चाहिए कि हम अपने बुजुर्गों की तरफ से चलाए गए पुरातन सभ्याचार व त्योहारों को किनारे कर समय की इस अंधी दौड़ में सिर्फ आगे ही दौड़ते जाएं। युवाओं की सोच में परिवर्तन हो, इसके लिए हमारी सरकारों और शिक्षाविदों को आगे आना होगा। इसके लिए नई शिक्षा नीति में व्यावहारिक शिक्षा को भी अनिवार्य किया जाए, ताकि आज का युवा अपनी संस्कृति और संस्कारों की ओर वापस लौट सके।

-जयसिंह गुडीवाल, सह सम्पादक

धर्म और महाभारत

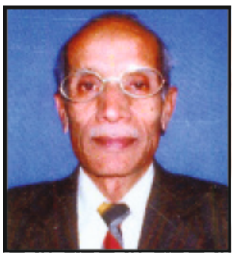

मेरा कर्तव्य ही मेरा धर्म है और यह वह धर्म है जो सब प्राणियों में समभाव की भावना का पोषक है। इसीलिए इसे सर्वधर्म मानकर उच्च स्थान दिया जाता है। यह धर्म ही है जो पूरे संसार से अविश्वास व भय को दूर करता है। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण आदि ग्रन्थों को उच्च से भी उच्चतम मानकर इनसे सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवा, धैर्य आदि की शिक्षा ध्वजा भी यही धर्म फहराता है। हमारा भारत संसार में धर्म की दृष्टी से सर्वोच्च स्थान रखता है। सब धर्मों की आदर के साथ उनके लिए अपनी भावना प्रगट करता है। भारत में अनेकों धर्मों, अनेक भाषाओं, अनेकों विचारों को मानने वाले लोग रहते हैं, फिर भी उनमें एकता व समरसता का ऐसा सूत्र है जो और कहीं देखने को नहीं मिलता। इसीलिए इसे सनातन धर्म की ध्वजा फहराने का सौभाग्य सभी मानते हैं तथा इसी से भारत के लोगों और भारतीयता की पहचान है।

भारत में रामायण ऐसा ग्रन्थ है जो धर्म के साथ मर्यादाओं की पहचान कराता है। इसीलिए राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है अर्थात् मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। कृष्ण की शिक्षा कर्तव्य परायणता की है, धर्म-अधर्म के भेद की है। धर्म-अधर्म की शिक्षा व सच्चाई से ही धर्म न मानने वालों (कौरवों) व धर्म मानने वाले (पाण्डवों) के बीच महाभारत हुआ था। जीत हमेशा सत्य व धर्म की ही हुई है और महाभारत में भी जीत धर्म की ही हुई थी जिसके सूत्रधार स्वयं श्री कृष्ण थे। भीष्म पितामह सत्य को जानते हुए भी अपने वचन से बंधे होने के कारण कौरवों के साथ रहे थे और उनकी तरफ से ही युद्ध में लड़े थे। पाण्डू के पुत्रों को कभी नुकसान नहीं पहुंचाने की वजह से वे महाभारत मे पाण्डवों को न मारकर उनकी सेना को ही मार रहे थे। दुर्योधन ने जब यह देखा तो वह पितामह के पास आकर बोला, आप युद्ध तो कौरवों की तरफ से कर रहे हैं लेकिन पांचों पाण्डवों को नहीं मार रहे हैं। यह हस्तिनापुर व कौरवों के प्रति विश्वासघात है। पितामह ने कहा तू रात को मेरे पास अपनी पत्नी को भेजना। मैं उसे अखण्ड सौभाग्यवती का वर दूंगा तथा साथ में विजयी भव का भी वचन दूंगा। दुर्योधन खुश होकर वापिस अपने शिविर में आ गया। यह बात श्री कृष्ण को मालूम हो गई सो उन्होंने आधीरात को कुछ समय पूर्व ही द्रोपदी को भीष्म पितामह के पास भेज दिया और समझा दिया क्या करना है? भीष्म अपने ध्यान में लगे हुए थे। द्रोपदी ने अपना मस्तक भीष्म पितामह के चरणों में झुका दिया। जब भीष्म ने देखा एक सुहागन नारी चरणों में शीश झुका रही है तो सोच यह दुर्योधन की पत्नी है जिसे मैंने बुलाया था। उन्होंने आशीर्वाद दिया सौभाग्यवती भवः, पुत्रवती भवः। यह सुनकर द्रोपदी (पांचाली) बोल पड़ी-क्या आप यह सत्य कह रहे हैं, क्या मेरे पतियों से एक भी नहीं मारा जाएगा, मैं सौभाग्यवती ही रहूंगी। भीष्म ने जब यह सुना और देखा यह पांचाली (द्रोपदी) है, दुर्योधन की पत्नी नहीं है, तो वे घबराकर उठ बैठे और कहा मेरा वचन खाली नहीं जाएगा। अब क्या था? दुर्योधन की पत्नी आई लेकिन पितामह ने उसे कोई वचन नहीं दिया। यह श्री कृष्ण ही थे जिनकी बदौलत कौरवों को मिलने वाला आशीर्वाद द्रोपदी के माध्यम से पाण्डवों को मिल गया।

पाण्डवों के मांगने पर दुर्योधन ने एक इंच जमीन भी पाण्डवों को नहीं दी। वे जंगलों में भटकते रहे और अन्त में पाण्डवों के साथ अन्याय होने के कारण महाभारत हुआ। लाखों-करोड़ों लोग मारे गए। सभी कौरव भी मारे गए। पाण्डवों की विजय हुई लेकिन पाण्डवों के पक्ष की औरतों को छोड़कर पूरे हस्तिनापुर की औरतें विधवा हो गईं। पाण्डवों को हस्तिनापुर का राज मिल गया। सुख चैन से युधिष्ठर राजा होकर जनता की सेवा करते, राज-काज करते रहे। कौरव पक्ष की औरतों को भी पूरे सम्मान के साथ सारी सुविधायें मिलती रहीं। कुन्ती, माधुरी, द्रोपदी आदि रानियां अपने को जनता की सेविकायें समझकर सेवा का कार्य करती रही। युधिष्ठर के अपने भाईयों, माताओं कुन्ती, माधुरी एवं कौरव पक्ष की माताओं-बहुओं के साथ द्रोपदी आदि का यथायोग्य राजसी वैभव के समान आदर भाव से जो कुछ भी उनके लिए हो सकता था, वो किया। अन्त में सब राजपाट कार्य अपने पुत्रों को देकर पांचों पाण्डव, कुन्ती व द्रोपदी के संग वन में गमन कर गये और सदा-सदा के लिए बनवासी बनकर अन्त में परमधाम अर्थात प्रभु के चरणों में जा पहुंचे।

पूरा महाभारत का खेल खत्म हो गया और इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होकर आज पाँच-छह हजार वर्ष बाद भी जनता के लिए आदर्श रूप में सामने है। ऐसा था धर्म-अधर्म का खेल महाभारत। इसीलिए कहता हूँ मित्रों, जीवन में कितनी भी पेरशानियां आये, हमेशा सत्य और धर्म का ही साथ देना व दीन-हीन-अपाहिजों की सेवा करना। भगवान आपकी मदद करेंगे। आप हमेशा खुश रहेंगे और प्रभु चरणों का ध्यान करते रहना।

- सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)

हिन्दू मान्यता- अधिक मास

हिन्दू मान्यता के अनुसार अधिक मास बहुत ही धार्मिक महत्व का होता है, अत: इस दौरान बड़ी ही पवित्रता के साथ दान, पुण्य, पूजा-पाठ आदि नियम से किये जाते हैं। यह हमारी हिंदू संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है। महिलाएं तो अधिक मास में सूर्योदय से पूर्व स्नान कर पूरे महीने व्रत करती हैं। इसे मल मास या **पुरुषोत्तम मास** भी कहते हैं।

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार बारह मास के दिनों को गिनने के बाद यह 354 होते हैं जबकि एक वर्ष में 365 दिन होते हैं और पृथ्वी इस वक्त में सूर्य का एक चक्र पूरा करती है इस तरह हिन्दू कैलेंडर में ग्यारह दिन कम होते हैं इसलिए इन दिनों को जोड़कर प्रति तीन वर्षों में अधिक मास आता है। कहा जाता है कि इस मास में पुण्य करने से दु:ख कम होते हैं।

मल मास को पुरुषोत्तम मास कहा जाने के पीछे धार्मिक मान्यता है कि इसका कोई स्वामी नहीं था और इसकी खिल्ली उड़ती थी, अपने दु:ख को लेकर नारद जी से कहा वे इसे श्री कृष्ण के पास लेकर गए तो आशीर्वादस्वरूप कृष्ण ने कहा कि मलमास का महत्व सभी मास से अधिक होगा और सभी लोग पूरे महीने दान-पुण्य करेंगे। इसे मेरे नाम पर पुरुषोत्तम मास पुकारा जाएगा, तब से यह मास इस नाम से जाना जाने लगा।

हमारी संस्कृति में ग्यारस या एकादशी भी महत्वपूर्ण है अधिक मास के कारण ये भी 24 के स्थान पर दो बढ़ जाती है जिन्हें परमा एवं पद्मिनी कहते हैं।

अधिक मास में शुभ कार्य नहीं किया जाता, अपनी गृहदशा में सुधार हेतु यह मास पूजा द्वारा फलदायक माना जाता है। इस बार सावन का पवित्र महिना 4 जुलाई से आरंभ होकर 31 अगस्त तक मनाया जाएगा। यह श्रावण मास बेहद खास है क्योंकि 18 जुलाई, 2023 से अधिक मास की शुरुआत हुई है इस वजह से सावन 59 दिनों का होने वाला है। इसमें महादेव व श्री हरि विष्णु की पूजा आराधना के लिए सर्वोत्तम समय है।

इस बार श्रावण के सोमवार भी आठ होंगे। कहा जा सकता है कि अधिकमास ही वह समय होता है जिसमें धार्मिक कार्यों के साथ चिंतन, मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर में समाहित पंचमहाभूतों का संतुलन स्थापित करने की कोशिश करता है। अत: इस दौरान किये गये कार्यों में व्यक्ति हर तीन साल में परम पावनता को प्राप्त कर नई ऊर्जा से परिपूर्ण हो जाता है।

-भारती तोंदवाल

नवाचार

आओ संस्कृत सीखे

संस्कृत	हिन्दी
कति जना: सन्ति?	कितने लोग हैं ?
पुन: आगच्छतु।	फिर से आइये।
अवश्यम् आगच्छामि।	जरूर आउँगा।
भवान् कथम् अस्ति ?	आप कैसे हैं ?
गृहे सर्वं कुशलम्।	घर में सब कुशल हैं।
आम्, सर्वं कुशलम्।	जी हाँ, सब कुशल हैं।
भवत: का वार्ता ?	आप का क्या समाचार है ?
भवान् एव श्रावयतु।	आप ही सुनाइये।
किं मेलनं/बहु विरलं जातम्?	क्या बात है ? मिलते कम हैं ?
आगच्छतु, उपविशतु।	आइये, बैठिये।
जलम् आनयामि?	पानी लाऊँ?
मास्तु/नैव।	नहीं।
कथम् आगमनम् अभवत्?	कैसे आना हुआ?
मार्ग: विस्मृत: किम्?	रास्ता भूल गये क्या?
चायं पिबति किम्?	चाय पियेगें क्या?
नैव, इदानीमेव पीत्वा आगच्छामि।	नहीं, इस समय पीकर आ रहा हूँ।
शैत्यम् अस्ति, स्वल्पं चायं भवेत्।	ठण्डक है, थोड़ी सी चाय चलेगी।

व्यवहारिक शब्दावली	
संस्कृत	हिन्दी
छुरिका	छुरी
सूचिका	सूई
कण्टक:	कांटा
अङ्कपेटिका	दराज
कटाह:	कड़ाई
भुशण्डी	बन्दूक
पुत्तल:	गुड्डा
पुत्तलिका	गुड्डी
सानिका	शहनाई
शङ्ख:	शंख
वातिकूपी	सिलेण्डर
चुल्लि:	चूल्हा
सिक्ता:	रेत
नाणकम्	सिक्का
आभूषणम्	आभूषण
आणि:	कील

-परमेश्वर प्रसाद कुमावत (राज्य पुरस्कृत शिक्षक), शाहपुरा (भीलवाड़ा) 9829321742

ऐसी आत्मनिर्भरता कितनी उचित है ?

आज का युग स्वतंत्र विचारधारा का युग है। आज महिलाएं हों या पुरुष, सभी को समान रूप से शिक्षा तथा रोजगार की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं। पुरुषों का कार्यक्षेत्र तो खैर सदैव ही जीविकोपार्जन करना तथा परिवार का पालन पोषण करना रहा है और उन्हें रोजगार हेतु घर से बाहर जाना ही पड़ता है। पर आज स्त्रियां भी शिक्षित होकर पुरुषों के समकक्ष खड़े होने तथा समान रूप से नौकरी पेशा जीवन शैली को प्राथमिकता देने लगी है। आज के समय की माँग को देखते हुए यह उचित भी है। कई पहलुओं से देखा जाए तो निश्चित रूप से स्त्रियों को भी पुरुषों के समान आत्मनिर्भर होने का पूर्ण अधिकार है। परन्तु इस आत्मनिर्भरता की अंधी दौड़ में क्या छूटता जा रहा है, इस ओर किसी का ध्यान हीं नहीं जा पाता पारिवारिक दृष्टिकोण से महिलाओं की जीवन शैली पर यदि विचार किया जाए तो आज अधिकांश महिलाएं नौकरीपेशा तथा कामकाजी वर्ग से है विशेष तौर पर युवतियों की प्राथमिकता नौकरी या जॉब करना है। मगर उनकी इस आकांशा का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव उनकी अपनी ही संतान पर पड़ता है। एक युवती खुद को आत्मनिर्भर बनाने की चाह में यह भूल जाती है कि एक माँ के रूप में वह अपने बच्चों के भविष्य को अनजाने ही खुद के हाथों खराब कर रही है। कहते हैं कि **माता ही संतान की सृजनकार होती है**। जन्म से पहले और जन्म के बाद माँ ही होती है जो अपने पालन-पोषण तथा संस्कारों से हाड़-मांस के लोथड़े को इंसान बनाती है। परन्तु वर्तमान समय ऐसा आ गया कि आज माताएं स्वयं के जीवन को संवारने के लिए अपनी ही संतान के जीवन को दांव पर लगा देती हैं। नौकरीपेशा महिलाएं अपने बच्चों को क्रेच तथा बोर्डिंग स्कूल के हवाले कर देती है। अनेक कामकाजी महिलाओं को यह तक पता नहीं होता कि बच्चा दिनभर में क्या खाता है, क्या पढ़ता है, कैसे रहता है, क्या सोचता है। घर तथा विद्यालय में क्या व्यवहार करता है ? वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ व संतुष्ट है या नहीं ? कहीं वह गलत राह पर तो नहीं जा रहा है, कहीं वह हीनभावना का शिकार तो नहीं हो रहा है या किसी के द्वारा प्रताड़ित तो नहीं किया जा रहा है। सुबह का जरूरी काम निपटाकर शाम को घर में वापस लौटने वाली माँ को यह लगता है कि बच्चे की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करके उसने माँ होने की समस्त जिम्मेदारी निपटा दी है। अनेक माता-पिता बच्चों को बोर्डिंग स्कूल में भेजकर या आया रखकर यह समझते हैं कि उन्होंने अपने बच्चे के लिए बहुत ही उत्तम परवरिश की व्यवस्था कर दी है। यही सोच उनकी सबसे बड़ी गलती है। भौतिक सुख सुविधाएं बच्चे के विकास में कोई सकारात्मक भूमिका नहीं निभाती। **बच्चे को पनपने के लिए आपका वात्सल्य चाहिए, आपके आलिंगन का सुरक्षा चक्र चाहिए, आपका सामीप्य चाहिए, आपकी ममता चाहिए**। माता-पिता का भावनात्मक समर्थन तथा व्यवहार ही बच्चे को जीवन में आगे चलकर एक मजबूत इंसान बनाने में सहायक होता है। मैंने स्वयं कुछ बच्चों को देखा है जिनकी माताएं नौकरीपेशा हैं। वे बच्चे शारीरिक रूप से कुपोषित हैं, कुछ बच्चे सारे दिन इधर-उधर भटकते रहते हैं। बाहर की खाद्य वस्तुएं खाते हैं क्योंकि घर पर समय से खाना नहीं बन पाता है। यहां तक कि कुछ बच्चे डिप्रेशन का शिकार भी हो रहे हैं क्योंकि उनके साथ उनका अकेलापन बाँटने वाला घर में कोई नहीं होता। दिनभर टी.वी. तथा मोबाइल फोन में कार्टून कैरेक्टर देखकर बच्चे उनके जैसा व्यवहार करने लगते हैं तथा उन्हीं की तरह बोलने लगते हैं। बच्चे काल्पनिक चरित्रों को जीने लगते हैं तथा भ्रमित मानसिकता में वास्तविक चेतना को खोते चले जाते हैं परिणामस्वरूप वहीं खतरनाक परिणाम सामने आते हैं जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। तो मेरा आपसे बस यही कहना है कि अपने भविष्य को शीर्ष पर बेशक पहुंचाएं मगर उसके लिए अपने बच्चों के भविष्य को धूमिल तथा अंधकारमय नहीं होने दें। – **उर्वशी बालोदिया**

बस के गन्तव्य तक नहीं पहुंचाने पर ट्रैवल्स पर 25,000 हर्जाना किया

जिला उपभोक्ता आयोग द्वितीय जयपुर द्वारा परिवादी सुरेन्द्र कुमार लाम्बा, सदस्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी को गंतव्य कुशलगढ़ तक नहीं पहुंचाकर बांसवाड़ा में ही उतारने को सेवादोष तथा अनफेयर ट्रेड प्रेक्टिस मानकर आयोग के अध्यक्ष जी.एल. मीणा ने महालक्ष्मी ट्रेवल्स, जयपुर पर 25,000 रुपए हजार्ना लगाया है। आयोग ने कुशलगढ़ तक जाने का खर्च 65 रुपए ब्याज सहित परिवादी को देने के भी आदेश किए हैं।

रामप्रकाश कुमावत, एडवोकेट

एडवोकेट लांबा प्रदेश स्तरीय सूचना संकलन समिति के सदस्य बने

सुरेन्द्र लांबा एडवोकेट को कांग्रेस प्रदेश स्तरीय सूचना संकलन समिति का सदस्य बनाया गया है। यह समिति आगामी विधानसभा चुनाव में आमजन की भावना व समस्याओं से सम्बन्धित सूचना एकत्र करके पार्टी आलाकमान तक पहुंचाएगी। इन्हें प्रदेश कांग्रेस कमेटी का सचिव भी बनाया गया है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से सी.एम. कुमावत तथा रमेश गैदर ने इन्हें माल्यार्पण कर बधाई दी।

राष्ट्रगान 'जन गण मन' के बारे में जानकारी

हमारा राष्ट्रगान हमारे देश की 'विविधता में एकता' को दर्शाता है। चाहे हमारा धर्म, भाषा, वेशभूषा, खानपान, परम्पराएं आदि 'तिरंगे' के नीचे एकजुट है। जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तब राष्ट्रगान गाया-बजाया जाता है। तब हम सभी भारतवासी इसके सम्मान में खड़े होकर इसे गाते हैं। अन्य अवसरों पर भी ऐसा होता है।

मुख्य बिन्दु

- हमारे राष्ट्रगान को हमारे राष्ट्रीय कवि श्री रविन्द्रनाथ टेगोर ने 11 दिसम्बर 1911 को लिखा था।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में 27 दिसम्बर 1911 को प्रथम बार इसे सरला देवी चौधराइन द्वारा गाया गया।
- वर्ष 1912 में यह गान 'भारत विधाता' शीर्षक से ब्रह्म समाज की 'तत्व बोधिनी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ, जिसके सम्पादक स्वयं टेगोर थे।

राष्ट्र गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

- कलकत्ता के बाहर प्रथम बार 28 फरवरी 1919 को बिसेन्ट थियोसोफिकल कॉलेज, आन्ध्र प्रदेश के मण्डानपेले में इसका अंग्रेजी संस्करण गाया गया था।
- 14 अगस्त 1947 को मध्यरात्रि के समय भारतीय संविधान निर्मात्री सभा की बैठक की समाप्ति पर इसे गाया गया।
- 24 जनवरी, 1950 को इसे राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया।

मर्यादाएं

राष्ट्रगान गाने की कुछ मर्यादाएं हैं, इसका हमें पालन करना चाहिए, जैसे—

- जब राष्ट्रगान बजे तो सभी को सावधान की मुद्रा में खड़ा होना आवश्यक है।
- इसके गान के समय सिर ऊँचा तथा आगे की ओर होना चाहिए।
- इसे अक्षरश गाना चाहिए।
- इसका गायन 52 सैकण्ड में होता है।
- इसे गाने के समय बाधा उत्पन्न करना दण्डनीय अपराध है।

भारत विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस : 14 अगस्त

सन् 1947 को भारत को 200 वर्षों की गुलामी के बाद बंटवारे की शर्त पर अंग्रेजों से आजादी मिली। विभाजन की रूपरेखा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 में दी गई थी। इससे दक्षिण एशिया में दो स्वतंत्र देश भारत और पाकिस्तान बने।

धर्म के नाम पर भारत और पाकिस्तान के बीच 14 अगस्त 1947 को बंटवारा शुरू हुआ, लाखों लोग इधर से उधर हो गए। परिवार छूटा, घर-बार छूट्या व विस्थापित होना पड़ा, बड़े पैमाने पर दंगे भड़के। देश का बंटवारा हुआ लेकिन शांतिपूर्ण तरीके से नहीं विभाजन की हिंसक प्रकृति ने भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता और संदेह का माहौल पैदा कर दिया जो आज तक उनके संबंधों को प्रभावित करता है। इस ऐतिहासिक तारीख ने कई खूनी मंजर देखे।

भारत का विभाजन खूनी घटनाक्रम का एक दस्तावेज बन गया 5-10 लाख लोगों की जानें गईं, यह दर्द था विभाजन का हिंसा और नासमझी में की गई नफरत भारत के लिए विभीषिका से कम नहीं थी। देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसका दर्द आज भी देश को झेलना पड़ रहा है। भारत पाक विभाजन ने भारतीय उप महाद्वीप के दो टुकड़े कर दिए। दोनों तरफ पाकिस्तान (पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान) और बीच में भारत। इस बंटवारे से बंगाल भी प्रभावित हुआ: पश्चिम बंगाल वाला हिस्सा भारत का रह गया और बाकी पूर्वी पाकिस्तान। पूर्वी पाकिस्तान को भारत ने 1971 में बांग्लादेश के रूप में स्वतंत्र राष्ट्र बनाया। भारत के लिए इतिहास का यह एक गहरा जख्म है।

इतिहास की एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि विभाजन के लिए वे ही नेता मानसिक रूप से तैयार थे, जिन्हें इसमें अपना हित और उज्ज्वल भविष्य नजर आ रहा था। किन्तु इस अदला-बदली में दंगे भड़के, जो लोग बच गए उनमें लाखों लोगों की जिंदगी बर्बाद हो गई।

भारत-पाक विभाजन की यह घटना सदी की सबसे बड़ी त्रासदी में बदल गई। यह केवल किसी देश की भौगोलिक सीमा का बंटवारा नहीं बल्कि लोगों के दिलों और भावनाओं का भी बंटवारा था।

"भारत विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस", सामाजिक विभाजन, वैमनस्यता के जहर को दूर करने तथा एकता, सामाजिक सद्भाव और मानव सशक्तीकरण की भावना को और मजबूत करने की याद दिलाएगा। इससे एकता, सामाजिक सद्भाव और मानवीय संवेदनाएं भी मजबूत होंगी।

संकलन : रमेश गैदर

कानूनी जानकारी

मृत्यु पश्चात सम्पत्ति को विवादों से बचायें : जीते जी करें वसीयत

व्यक्ति की सामान्य प्रवृत्ति है वह समाज में दो तरीके से सम्पत्ति संग्रह करता है। एक तो स्व अर्जित दूसरी पैतृक। अपने जीवनकाल में व्यक्ति भले कम खा लेगा पर स्वयं का घर/खेत-खलियान/उद्योग/दुकान आदि चल-अचल सम्पत्ति अर्जित करना अवश्य चाहता है। जब व्यक्ति सम्पत्ति अर्जित कर लेता है तो चाहे वह स्वयं इसका उपभोग कम समय ही करें पर अपने बेटे/बेटियों/पत्नी/रिश्तेदारों का भविष्य उसमें देखता है। वह यह भी चाहता है कि उसके मरने के बाद उसके वारिस सम्पत्ति के कारण झगड़ा नहीं करें तथा उस सम्पत्ति में सुख से रहें। इसका समाधान है अपने जीते जी वसीयत करना।

मृत्यु बाद अपनी सम्पत्ति का बंटवारा व किसे सोंपने का निर्णय लेना तथा किस सम्पत्ति को अथवा सम्पत्ति के किस हिस्से को किसे देना है इसका एक दस्तावेज तैयार कर सुरक्षित रखना **"वसीयत"** करना होता है जो वसीयतकर्ता की मृत्यु के पश्चात् लागू होती है। इससे बाहरी लोगों का कब्जा करने अथवा विवाद करने से सम्पत्ति को बचाया जा सकता है। कानून की नजर में वसीयत एक वैद्य दस्तावेज है। वसीयत के बाद न तो कोई आपत्ति कर सकता है न प्रश्न।

वसीयत कैसे लिखे—

- वसीयत नामे में वसीयतकर्ता का नाम, पिता का नाम, उम्र, जाति, निवास का पता लिखा जाये।
- इसमें परिवार के सभी सदस्यों का विवरण देवें तथा जिसे वसीयतकर्ता अपनी सम्पत्ति देना चाहे उसका नाम, वसीयतकर्ता से सम्बन्ध, उस कितने समय से जानता है की जानकारी तथा उसे ही सम्पत्ति दी जा रही है उसे देने का कारण अंकित किया जावे। साथ ही वसीयत की जाने वाली सम्पत्ति का पूर्ण व स्पष्ट विवरण अंकित किया जावे।
- जिन सम्बन्धियों या निकट रिश्तेदारों को सम्पत्ति नहीं देना चाहते उसका विवरण मय कारण लिखा जाना चाहिये।
- वसीयतनामे को वसीयतकर्ता द्वारा अच्छी तरह पढ़ व समझ लिया है तथा स्वस्थ मस्तिष्क से बिना किसी दबाव के वह यह वसीयत सम्पादित कर रहा है लिख कर वसीयतकर्ता द्वारा हस्ताक्षर कर दिनांक अंकित करें तथा फोटो लगायें।
- गवाह के हस्ताक्षर, पता, फोटो व पहचान भी अंकित करायी जायें, जो वयस्क व मानसिक रूप से स्वस्थ हों।
- वसीयत का पंजीकरण कराना वैकल्पिक है अनिवार्य नहीं है। 100 रुपये के स्टाम्प पर वसीयत सम्पादित कर नोटेरी से प्रमाणित कराया जा सकता है। वसीयत के सम्बन्ध में कोई कानूनी अस्पष्टता लगे तो वकील की राय ली जा सकती है।

यह कि वसीयत वसीयतकर्ता अपनी स्व अर्जित चल-अचल सम्पत्ति की कर सकता है पैतृक सम्पत्ति की नहीं। पैतृक सम्पत्ति के केवल उस भाग की वसीयत की जा सकती है जो वसीयकर्ता के हिस्से/अनुपात में हो।

– रामप्रकाश कुमावत, एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय

प्रजापालक! आप सच्चे कर्मयोगी हैं

महान सम्राट अशोक के राज्य में एक बार अकाल पड़ा। जनता भूख-प्यास से त्रस्त थी। राजा ने तत्काल अन्न के भण्डार खुलवा दिए। अनाज लेने वालों का तांता लगा था, जो शाम तक नहीं टूटता। अन्त में एक कृशगात बूढ़ा उठा, उसने अपना अन्न माँगा, बाँटने वाले थक चुके थे। डाँटकर बोले-कल आना, खैरात हो गई है।

तभी एक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला नवयुवक उधर आया। बाँटने वालों से कहा-बेचारा बूढ़ा है। मैं देख रहा हूँ, बड़ी देर से बैठे हैं, शरीर से दुर्बल होने के कारण सबसे पीछे रह गये हैं। इसे अन्न दे दो। उसकी वाणी में ऐसा प्रभाव था कि बाँटने वालों ने अन्न दे दिया। उस युवक की सहायता से गठन बाँध ली। अब उठे कैसे? तब वही युवक बोला-लाओ मैं पहुँचा देता हूँ। वह गठरी उठाकर उस बूढ़े आदमी के पीछे-पीछे चलने लगा। घर थोड़ी दूर रह गया। तभी सेना की एक टुकड़ी उधर से गुजरी। टुकड़ी के नायक ने घोड़े से उतरकर गठरी उठाने वाले युवक को फौजी अभिवादन (सेल्यूट) किया। गठरीधारी युवक ने संकेत कर आगे कुछ बोलने से मनाकर दिया। फिर भी बूढ़े व्यक्ति की समझ में कुछ-कुछ आ गया, वह वहीं खड़ा हो गया। कहने लगा-आप कौन हैं? सच-सच बताओ। वह गठरीधारी युवक बोला-"मैं एक नौजवान हूँ और तुम वृद्ध हो, दुर्बल हो।" बस इससे अधिक परिचय व्यर्थ है। चलो बताओ, तुम्हारा घर किधर है? अब तक वह बूढ़ा व्यक्ति पूरी तरह पहचान चुका था। वह पैरों में गिर गया, क्षमा माँगते हुए बड़ी मुश्किल से बोला-प्रजापालक! आप सच्चे कर्मयोगी हैं। अशोक के समान कर्मयोगी समृद्धि, यश एवं प्रतिष्ठा अनायास ही पा जाते हैं यद्यपि उनमें कामना नहीं होती।

ते प्राप्तुवन्ति मामेव सर्वभूत हिते रताः।।

(श्रीमद्भगवत्गीता 12/4)

– प्रो. बालकृष्ण कुमावत, उज्जैन

वास्तु दोष और रोग

ब्रह्मा जी का उद्देश्य था कि वास्तुशास्त्र के माध्यम से गृह स्वामी को बना हुआ घर शुभ फल, पुत्र-पौत्रादि, सुख, शांति, धन और वैभव को बढ़ाने वाला हो। जब घर में वास्तु दोष पैदा होते हैं तो वहां रहने वाले लोगों के जीवन में कई प्रकार की समस्याएं पैदा होने लग जाती है और बहुत कम लोग यह समझ पाते हैं कि यह बेवजह की परेशानियां असल में घर में किन वास्तु दोषों के कारण हो रही हैं। आज विज्ञान और आधुनिक चिकित्सा की इतनी तरक्की होने के बाद भी लोगों को पहले की तुलना में ज्यादा शारीरिक और मानसिक रोग हो रहे हैं। रोगों की एक बड़ी वजह खानपान और जीवनशैली तो है ही, इसके साथ में वास्तु दोषों का भी अपने आप में एक बड़ा रोल माना जा सकता है।

आज के समय में बेहद आधुनिक तकनीकों के कारण भवनों की बनावट पहले की तुलना में बेहद सुंदर और भव्य तो हो गई है लेकिन, अब भवन आयताकार या चौकोर ना होकर अनियमित आकार के बनने लगे हैं और घरों का यही अनियमित आकार एवं बनावट उनमें वास्तु दोषों को उत्पन्न कर रहे हैं। यह एक बड़ी सच्चाई है कि वास्तु दोषों का व्यक्ति के रोगों से अभिन्न संबंध होता है। आइए इन वस्तु दोषों के विषय में विस्तार से चर्चा करते हैं।

■ घर का **उत्तर-पूर्वी भाग** यानि ईशान कोण का संबंध जलीय तत्व से होता है। ईशान कोण को जितना खुला और हल्का बनाकर रखा जाएगा घर के लोग उतने ही स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। ईशान कोण में रसोई का निर्माण करने पर जलीय तत्व के दूषित होने के कारण उस घर के लोगों को पेट से संबंधित कई बीमारियों का भी सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही परिवार के सदस्यों में छोटी-छोटी बातों को लेकर तनाव भी बना रहता है। ईशान कोण में भूमिगत जल के भंडारण के साथ ही जलापूर्ति की पाइप लाइन की व्यवस्था को बेहद शुभ माना जाता है। ईशान कोण में वास्तु देवता का सिर होने के कारण घर में ईशान कोण बिल्कुल भी कटा हुआ नहीं होना चाहिए। ईशान कोण के कटे होने से उस घर में निवास करने वाले व्यक्ति रक्त विकार के साथ ही यौन रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं, इसके साथ ही वहां प्रजनन क्षमता भी प्रभावित हो सकती है। ईशान कोण ज्यादा दबा हुआ हो या ज्यादा कटा हुआ हो या फिर जरूरत से बहुत ज्यादा बढ़ा हुआ हो अन्य दिशाओं की तुलना में बहुत ज्यादा ऊपर उठा हुआ हो या ईशान कोण को गोल बना दिया गया हो या फिर वहां पर शौचालय, सेप्टिक टैंक, स्थित हो तो इन प्रबल वास्तु दोषों के कारण कई बार घर में कैंसर जैसी बड़ी बीमारी की भी संभावना पैदा हो जाती है। घर की ईशान दिशा में कोई वास्तु दोष हो तो ईशान कोण में या फिर अपने पूजा घर में हस्त निर्मित ईशान दोष निवारक यंत्र या फिर गुरु ग्रह का वैदिक यंत्र अवश्य स्थापित करना चाहिए।

■ घर के **दक्षिण-पूर्व भाग** यानि अग्नि कोण का संबंध अग्नि तत्व से होता होता है। इस अग्नि कोण में रसोई का निर्माण करने से उस घर के लोग स्वस्थ बने रहते हैं। अगर इस दिशा में जल भंडारण या जल स्रोतों की व्यवस्था कर दी जाए तो वहां रहने वाले लोगों को उदर रोग, आंख संबंधी विकार के साथ ही कई प्रकार की बीमारियों की प्रबल संभावनाएं बन जाती है। घर का आग्नेय कोण यदि ज्यादा बढ़ा हुआ हो तो उस परिवार की स्त्रियों को शारीरिक कष्ट के साथ ही मानसिक पीड़ा भी अक्सर बनी रहती है। अग्नि कोण में कोई भी वास्तु दोष होने पर जातक को अपने पूजा घर में या फिर आग्नेय कोण में आग्नेय दोष निवारक यंत्र अथवा शुक्र का हस्त निर्मित व रत्न जड़ित वैदिक यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए।

■ **घर के दक्षिण-पश्चिम भाग (नैऋत्य कोण) :** जब किसी घर के नैऋत्य कोण में वास्तु दोष हो और इसके साथ ही व्यक्ति की जन्म कुंडली में राहु भी पीड़ित हो तो, उस परिवार में असमय मृत्यु की आशंका, अहंकार की भावना, त्वचा रोग, मानसिक रोग आदि की संभावनाएं प्रबल रूप से बनी रहती है। नैऋत्य कोण को हल्का और खुला नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने पर उस घर के लोगों में क्रोध के साथ ही कुछ निराशा के भाव भी देखे जा सकते हैं। नैऋत्य कोण को हमेशा भारी निर्माण से युक्त रखना अच्छा माना जाता है। अगर घर का नैऋत्य कोण कटा हुआ है तो उस घर में रहने वाले लोगों को मधुमेह, कार्यों में जल्दबाजी के साथ ही ज्यादा सोचने की बीमारी भी देखने को मिल सकती है। जब घर का नैऋत्य कोण अधिक बढ़ा हुआ हो या फिर बहुत ज्यादा नीचा हो तो वहां रहने वाले व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर बेहद खराब असर पड़ता है इसलिए, नैऋत्य कोण ना तो कटा हुआ होना चाहिए और ना ही अधिक बढ़ा हुआ होना चाहिए। यदि घर के नैऋत्य कोण में घर का मुख्य द्वार हो और वहीं पर टैंक या किसी बड़े गड्ढे का निर्माण किया गया हो तो, उस घर में अपयश के साथ ही लकवा, हार्ट अटैक, एक्सीडेंट आदि की समस्याएं देखने को मिलती हैं। जब किसी घर के आंगन का पानी नैऋत्य कोण की ओर से बह करके बाहर निकलता है तो उस घर में भी अक्सर अनचाही समस्याओं या अनहोनी की संभावना बनी रहती है। जब किसी घर के नैऋत्य कोण में घर का मुख्य रास्ता हो तो महिलाएं उन्माद जैसे रोगों से पीड़ित रहती हैं। घर के नैऋत्य कोण में कोई भी दोष होने पर वहां पर हस्त निर्मित नैऋत्य दोष निवारक यंत्र अवश्य स्थापित करना चाहिए।

■ **वायव्य कोण** के अधिक बढा होने पर या अन्य वास्तु दोषों के कारण इस परिवार की स्त्रियों को त्वचा संबंधित रोग एवं एलर्जी आदि के साथ ही मानसिक अशांति की समस्या भी देखने को मिलती है। घर के वायव्य कोण में वास्तु दोष होने पर वायव्य

दोष निवारक यंत्र या फिर चंद्रमा का हस्त निर्मित वैदिक यंत्र अवश्य स्थापित करना चाहिए।

■ घर का केंद्र भाग **ब्रह्मस्थान** के नाम से जाना जाता है। आकाश तत्व से संबंधित होने के कारण ब्रह्म स्थान को खुला और साफ-सुथरा बनाकर रखना चाहिए। इस स्थान पर विशेषकर शौचालय, सेप्टिक टैंक, सीढ़िया या गहरे गड्ढे का निर्माण करना अशुभ माना जाता है। इन वास्तु दोषों के कारण घर के विकास कार्य तो प्रभावित होते ही है इसके साथ ही हार्ट से संबंधित बीमारियां भी घर में शुरू होने लग जाती है या पहले से हैं तो इनको सही होने में काफी समय लग जाता है। ब्रह्मस्थान के वास्तु दोष घर के लोगों में कई प्रकार की बीमारियां और उनको परेशानियां पैदा करते हैं। ब्रह्म स्थान के साथ ही घर में कहीं भी और कैसा भी वास्तु दोष होने पर आपको घर के मंदिर में हस्त निर्मित वैदिक संपूर्ण वास्तु यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए।

■ जब घर की **पूर्व दिशा** में भारी निर्माण किया गया हो और निर्माण किए हुए कमरों का ढलान पश्चिम दिशा की ओर हो तो वहां रहने वाले व्यक्तियों को आंखों की बीमारियों के साथ ही लकवा आदि की भी समस्या देखने को मिल सकती है। पूर्व दिशा में दोष होने पर घर की पूर्व दिशा में या घर के मंदिर में सूर्य का हस्तनिर्मित वैदिक यंत्र अवश्य स्थापित करना चाहिए।

■ घर के **पश्चिमी भाग** में प्रबल वास्तु दोषों के साथ ही मुख्य द्वार भी हो तो उस घर के पुरुषों में उन्माद जैसे रोगों की संभावनाएं बढ़ जाती है। घर की पश्चिम दिशा में दोष होने पर घर की पश्चिम दिशा की दीवाल पर या पूजा घर में हस्तनिर्मित शनि के वैदिक यंत्र का अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

■ इस प्रकार से आप भी अपने घर को वास्तु अनुरूप व्यवस्थित करके अपने जीवन को सुख, समृद्धि, शांति और उन्नति से परिपूर्ण बनाकर स्वस्थ और दीर्घायु हो सकते हैं।

-डॉ योगेश, ज्योतिषाचार्य, मानसरोवर, जयपुर।
M.:8058169959

मारवाड़ का मूल धन है 'काचरी'

रुत में ताजा खाई जाती है और बिना रुत के साल भर सुखाई हुई खाई जाती है। काचर हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, ये थाली में ना मिले तो बेकग्राउंड में ''जग सूना-सूना लागै'' गाना स्वतः ही बजने लगता है। एक मारवाड़ी यदि एक हफ्ता तक काचरी की चटनी ना खाए तो उसके जीवन में उदासीनता आ जाती है। बिना खटास के थाली तो अधूरी रहती ही है, जीवन भी नीरस हो ही जाता है। काचरी की सब्जी, काचरी की चटनी, काचरी का अचार। जितना कमाल ये अकेली सोलो परफॉर्मेंस में करती है, उससे **डेडली** तो उसके कॉम्बिनेशन होते है। काचरी फली की सब्जी साक्षात स्वर्ग मिल जाने जैसा ही है, थाली में रोटी पोंछ-पोंछकर पूंछ पूंछकर, चूर-चूरकर ना जीमी तो क्या खाक जीमा। वही जादुई स्वाद ऊँगली तक चाट जाने में आता है, यदि उसमें काचरी की खटास लगी हुई हो। बाजरी की रोटी के साथ खा लो तो जैसे करोड़ो की लॉटरी लग गई।

काचर महज सब्जी नहीं, मानवीय स्वभाव का भी बड़ी सहजता से वर्णन करता है। बड़े वाला काचर बड़ा जादू बिखेरता है, इसलिए शरारती व्यक्ति को हम मटकाचर कह देते है। मोहल्ले की सबसे ज्यादा गोसिप बिचिंग करने वाली महिला का नाम यदि काचरी बाई ना निकला तो यह काचर देवता का साक्षात अपमान है।

अधिक उत्पाति व्यक्ति को हम काचर का बीज ही कहते हैं। जैसे एक काचर का बीज हजारों किलो दूध तक को फाड़ देता है, वैसे ही काचर के बीज के स्वभाव वाला व्यक्ति एक क्षण में सब बिखेर देता है।

वैसे काचर यूँ ही काचरी नहीं बन जाता, बड़ी मेहनत करती है यहाँ की औरतें। उसके छिलके उतारकर धूप में सूखने को रख देती हैं, इस तरह से उसका कायांतरण काचर से काचरी में हो जाता है। बचपन से आज तक यह गुत्थी सुलझ नहीं पाई की सिर्फ सुखाने मात्र से उसका लिंग परिवर्तन कैसे हुआ। कल तक जो काचर थी, वो काचरी कैसे बना।

यहाँ तक माना जाता है कि इसको खाने के लिए देवलोक भी तरसता होगा, वो भी समय समय पर धोरों का ट्रिप कर ही लेते होंगे। जो काचरी हमारी थाली की शान है, वो देवलोक की थाली तक में नहीं। इसलिए ही तो कवियों ने लिख डाला।

कैर, कुमटिया सांगरी, काचर बोर मतीर।
तीनूं लोकां नह मिलै, तरसै देव आखीर।

बालपन में, सामने वाले घर की काकीसा जब सिलबट्टे पर काचर लहसन की चटनी पीस रही होती थी तब तक तो आसपास के सभी बच्चे एक-एक रोटी हाथ में लेकर लाईन में लग चुके होते थे। क्या मजाल की चटनी, सिलबट्टे से कटोरी तक की यात्रा भी तय करे, वो तो सीधा रोटी में चुपड़ेगी और अनंत आनंद की यात्रा पर सीधा जिव्हा और उदर गटक जायेगी।

इसका लोकमहत्व भी इतना अधिक है की दिवाली पर लक्ष्मी पूजन की थाली में भी काचर विशिष्ट स्थान रखती हैं। दिवाली की लक्ष्मी जी की हठड़ी में फूली, पताशा के साथ काचर भी इतराते हुए बिराजता है। यहां तक कहा गया है—

'दीयाळी रा दीया दीठा,
काचर बोर मतीरा मीठा।'

मारवाड़ की शान और वहाँ के दैनिक जीवन की जान काचरी की अनंत गाथा है, इसका जितना वर्णन करो कम है।

मुकेश कुमावत नर्मदा नदी में नहाते हुए डूबे

14 लोगों के साथ नावां निवासी 20 वर्षीय मुकेश कुमावत परिवार के इकलौते चिराग भी सोमवती अमावस्या पर ओंकारेश्वर गए थे वहां नर्मदा नदी के गौमुख घाट में स्नान के समय उनका पांव फिसलने से वे गहरे पानी में चले गए। उन्हें बचाने के प्रयास में श्री शंकर पुत्र कालूराम कुमावत एवं श्री सुरेश नदी में कूद गए किन्तु वे भी तीनों तेज बहाव में बह गए। वहां उपस्थित श्रीमाल चन्द कुमावत व अन्य लोगों ने सुरेश को तो बचा लिया किन्तु मुकेश व शंकर को नहीं बचा सके।

घाट में मौजूद गोताखोरों व नाविकों ने काफी प्रयास किया तो मुकेश का शव बरामद हुआ तथा शंकर की तलाश नहीं हो पाई। श्री मुकेश के परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय है, ऐसे में मुकेश के डूबने से निधन से समस्या और विकट हो गई है।

टेक्सॉस, अमेरिका में 10 हजार लोगों ने किया गीता पाठ

गत गुरु पूर्णिमा, 3 जुलाई, 2023 को अमेरिका स्थित टेक्सॉस स्थित एलन ईस्ट में 10 हजार लोगों ने एक साथ गीता पाठ किया जिसमें 4 वर्ष से 84 वर्ष तक की उम्र के लोग शामिल थे। इस कार्यक्रम का आयोजन एसजीएस गीता फाउण्डेशन व योग संगीता की ओर से किया गया जिसमें संत गणपति सच्चिदानंद जी महाराज की उपस्थिति भी रही।

बड़े हर्ष का विषय है कि देश ही नहीं विदेश में भी गीता का संदेश बड़ी रुचि एवं श्रद्धा के साथ पढ़ा व सुना जाता है। ज्ञातव्य है कि अब गीता का अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया जाकर उपलब्ध कराया जा रहा है।

बाबा रामदेव मंदिर बरकत नगर के मुख्य द्वार का डिजाइन बनाया

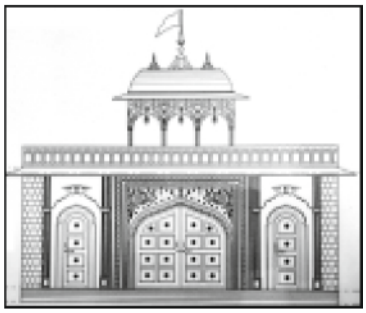

श्री अरुण कुसुम्बीवाल ने कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर-टोंक फाटक, जयपुर में स्थित समिति कार्यालय व बाबा रामदेव मंदिर के मुख्य द्वार का डिजाइन किया। उसके लिए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

-राम प्रकाश कुमावत (मारवाल), मंत्री, कुमावत क्षत्रिय विकास समिति बरकत नगर टोंक फाटक जयपुर।

गुमनाम क्रांतिकारी

1. नीरा आर्य : भारत की पहली महिला जासूस

नीरा आर्य भारत की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेन्ट में एक सैनिक के रूप में भर्ती हुई। ये अपनी साथी महिलाओं के साथ पुरुष भेष में अंग्रेजों के विरुद्ध जासूसी अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न किए। इनकी प्रतिभा एवं बहादुरी से प्रभावित हो नेताजी सुभष चन्द्र बोस ने इन्हें कैप्टिन बनाया।

इनका विवाह गुप्तचर विभाग ब्रिटिश सरकार के अफसर श्रीकान्त जयरंजन दास के साथ हुआ था। उन्हें अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों की जासूसी तथा मारने की जिम्मेदारी दे रखी थी। जब दोनों को आपस में एक-दूसरे का पता लगा तो वे एक-दूसरे की गतिविधियों पर नजर रखने लगे। एक दिन जब वो नेताजी सुभाष मिलने जा रही थीं तो गुपचुप तरीके से इनके पति ने इनका पिछा किया तथा नेताजी पर गोली चलाई जो उनके ड्राइवर को लगी। राष्ट्र भक्त एवं क्रांतिकारी नीरा आर्य ने देशभक्ति का परिचय देते हुए अपनी बंदूक के संगीन से अपने पति की हत्या कर दी। इन्हें काले पानी की सजा हुई। अंग्रेज सरकार ने अनेक प्रलोभन दिए कि अपने साथियों के बारे में बता दे किन्तु अमानवीयता व अभद्रता की हदें पार करने व स्तन काटने का प्रयास करने के उपरान्त भी उसने किसी का नाम नहीं बताया।

भारत की आजादी के बाद अपने अन्तिम दिनों में वो झोंपड़ी में रहती तथा फूल बेचकर जीवन यापन करती। उनका निधन 26 जुलाई, 1998 को वृद्धावस्था में हो गया। किन्तु ऐसी क्रान्तिकारी महिला जिसने देश की आजादी के लिए इतना बड़ा काम किया उसका नाम भारत आजाद होने के बाद गुमनामी में ही रहा।

2. क्रांतिकारी खुदीराम बोस

खुदीराम बोस क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति के सदस्य बन 15 वर्ष की कम उम्र में ही बम बनाना सीख गए थे। ब्रिटिश राज के विरुद्ध पर्चे बांटते हुए गिरफ्तार भी हुए। मुजफ्फर बिहार में अंग्रेज मजिस्ट्रेट डगलस किंग्स फोर्ड द्वारा छोटी-छोटी बातों पर भारतीयों को सजा दे दिया करते थे। क्रांतिकारियों ने उस पर बम फेंकने का जिम्मा खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी को दिया।

कोर्ट से आते समय उसके साथ पुलिसकर्मी रहते थे ऐसे में उन्हें मारना कठिन था। वह रोजाना शाम यूरोपीयन क्लब जाता था। रात को लौटते समय खुदीराम ने उसकी चलती बग्गी में चढ़कर तथा बम गिराकर फरार हो गए। संयोग से उस दिन बग्गी में उसकी पत्नी व बेटी थी जिनकी मौत हो गई। क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए नाकाबंदी व पुलिस बल भारी संख्या में तैनात था। वो कलकत्ता स्टेशन जा रहे थे वहां पुलिस ने उन्हें पहचान कर गिरफ्तार कर लिया तब उन्हें पता लगा कि डगलस तो बच गया। उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया जहां उन्होंने पूरी घटना को हंसते-हंसते स्वीकार कर लिया। 18 वर्ष की उम्र में 11 अगस्त, 1908 को उन्हें फांसी दे दी गई। **- शोभिका कुमावत**

शिव की महिमा

जीवन में जहाँ भी सत्य है, वहीं शिव का वास है।

शिव को जाने बिना इस लोक को जानना असंभव है। उनकी आराधना से मोक्ष मिलता है। शिव का जीवन ही प्रकाश है, जब प्रकाश होगा तो सदैव ही प्रेम, करुणा, साधना व भक्ति होगी।

शिव परिवार : शिव की अर्धांगिनी पार्वती है। इनके दो पुत्र— स्कन्द और गणेश हैं। स्कन्द को कार्तिकेय भी कहते हैं। आदि सतयुग के राजा दक्ष की पुत्री पार्वती माता को सती कहा जाता है। उसी को शक्ति भी कहते हैं। पार्वती नाम इसलिये पड़ा कि वे पर्वतों के राजा की पुत्री थी।

शिव महिमा : शिव औघड़ हैं, गृहस्थ हैं, महायोगी हैं, त्यागी हैं, तपस्वी हैं, पिता है, गुरु हैं, मृत्यु हैं, जीवन हैं। वे ज्ञान का वेद है, वे रामायण के प्रणेता हैं। शिव विषधर हैं, नीलकण्ठ, पर्वत पर धूनी रमाये, बदन पर मृगछाला धारण किये, कालों के महाकाल, गोदी में गजानन्द लाला, जटा में गंगा, शीश पर चन्द्र, भस्मी चौला रमाये विराजमान हैं।

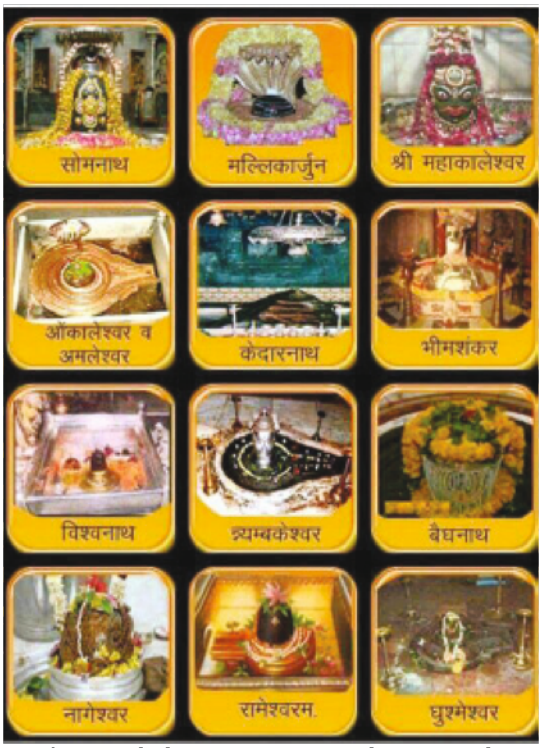

शैव परम्परा : ऋग्वेद में वृक्षभदेव का वर्णन मिलता है, जो जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव कहलाते हैं। माना जाता है कि शिव के बाद मूलतः उन्हीं से एक ऐसी परम्परा की शुरुआत हुई जो आगे चलकर शैव, सिद्धनाथ, दिगम्बर और सूफी सम्प्रदाय में विभक्त हो गई। यह शोध का विषय है।

शिव के प्रमुख नाम : शिव के वैसे तो अनेकों नाम हैं जिनमें 108 नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है उनके प्रचलित नाम मुख्यतः महेश, नीलकण्ठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रयंबक, त्रिलोकेश, जयशंकर, विश्वनाथ, हर, शिव शंभु, भूतनाथ और रूद्र है।

शिव ग्रंथ : वेद और उपनिषद सहित विज्ञान भैरव तंत्र, शिव पुराण और शिव संहिता में शिव की सम्पूर्ण शिक्षा व दिक्षा समाई हुई है। महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित शिव पुराण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इस ग्रंथ में भगवान शिव की भक्ति महिमा का उल्लेख है। इसमें शिव के अवतार आदि विस्तार से लिखे हैं।

शिवलिंग : वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है, उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की सम्पूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं, श्रावण मास में विशेषकर शिव की आराधनाप जल चढ़ाकर की जाती है, जल चढ़ाते समय "ॐ नमः शिवाय" का जप करना चाहिये। शिवलिंग पर विल्व पत्र चढ़ाना चाहिये।

वस्तुतः यह सम्पूर्ण सृष्टि बिन्दू नाद स्वरूप है, बिंदू शक्ति और नाद शिव है। यही सबका आधार है। बिन्दू और नाद अर्थात् शक्ति और शिव का संयुक्त रूप है जो शिवलिंग में अवस्थित है। बिन्दू अर्थात् ऊर्जा और नाद अर्थात ध्वनी, यही दो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना की जाती है।

ज्योतिर्लिंग : हिन्दू धर्म पुराणों के अनुसार शिवजी जहां-जहां स्वयं प्रकट हुए हैं उन बारह स्थानों पर स्थित शिवलिंगों को ज्योतिर्लिंगों के रूप में पूजा जाता है। द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं :— (1) श्री सोमनाथ (2) श्री मल्लिकार्जुन (3) श्री महाकाल, (4) श्री ओंकारेश्वर (5) श्री केदारनाथ (6) श्री भीमाशंकर (7) श्री विश्वनाथ (8) श्री त्रयंबकेश्वर (9) श्री वैद्यनाथ (10) श्री नागेश्वर (11) श्री रामेश्वर व (12) श्री घृष्णेश्वर।

नोट: मेरे द्वारा लिखित पुस्तक "द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन" यात्रा के संस्मरण, 2022 में इनका विस्तृत वर्णन लिखा है।

शिवचिह्न : वनवासी व साधारण व्यक्ति भी पत्थर के ढेले व बटिया को शिव का चिह्न मानते हैं। इसके अलावा रूद्राक्ष और त्रिशूल को भी शिव का चिह्न माना जाता है। कुछ लोग डमरू व अर्धचन्द्र को भी शिव का चिह्न मानते हैं।

शिव पार्षद : बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव पार्षद हैं।

शिव गण : भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय। इसके अलावा पिशाच, दैत्य और नाग, नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है।

शिव के द्वारपाल : नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा महेश्वर और महाकाल हैं।

शिव पंचायत : सूर्य, गणपति, देवी, रूद्र और विष्णु ये शिव-पंचायत कहलाते हैं।

शिव की महिमा अनन्त है। शिव बहुत ही सरल देवता हैं, एक लोटा जल से प्रसन्न हो जाते हैं। भगवान शिव को मृत्युंजय भी कहते हैं, उनकी कृपा से मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ मनुष्य भी जीवित हो उठता है।

शिव का आकार शून्य व ज्योतिस्वरूप है। शिव को समझने का अर्थ है खुद का रूपान्तरण। शरीर, मन, बुद्धि से आत्मा की यात्रा है शिव।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

– लक्ष्मी नारायण सिरसवा (पचारवाले)

कारगिल विजय दिवस - 26 जुलाई

फरवरी 1999 में पाकिस्तानी प्रधान मंत्री नवाज शरीफ और भारतीय प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के बीच लाहौर शिखर सम्मेलन के बाद, तनाव को कम कर दिया गया।

कारगिल घुसपैठ की योजना पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल परवेज़ मुशर्रफ और जनरल स्टाफ के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल मोहम्मद अजीज के दिमाग की उपज थी। पाकिस्तान का मुख्य उद्देश्य कश्मीर के मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना था। पाकिस्तानी सेना ने योजना को अत्यंत गुप्त रखा। बटालिक के पूर्व और द्रास के उत्तर के क्षेत्रों में इस घुसपैठ में प्रशिक्षित मुजाहिदीन और पाकिस्तानी सेना के नियमित सैनिक थे। ऊँचाइयों पर, घुसपैठिए पेशेवर सैनिक और भाड़े के सैनिक थे, जिनमें पाकिस्तानी सेना की उत्तरी लाइट इन्फैंट्री की तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी और 12वीं बटालियन शामिल थीं। इनमें पाकिस्तान के स्पेशल सर्विसेज ग्रुप के सदस्य और कई मुजाहिद्दीन भी थे। लगभग 5000 घुसपैठिये वहां ऊंचाई पर थे, घुसपैठ का क्षेत्र 160 वर्ग किमी था। पाकिस्तान की सेना एके 47 और 56 मोर्टार, तोपखाने, विमान भेदी बंदूकें और स्टिंगर मिसाइलों से थी।

कारगिल का इलाका बेहद ऊबड़-खाबड़ था और मुख्य सड़कों से एलओसी की ओर जाने के लिए बहुत कम रास्ते थे जो सर्दियों में बर्फ से ढक जाते हैं, इससे आवाजाही लगभग असंभव हो जाती है।

8-15 मई, 1999 के दौरान कारगिल पर्वतमाला के ऊपर भारतीय सेना के गश्ती दल ने घुसपैठियों का पता लगा।

कारगिल युद्धः भारतीय सेना की कार्रवाई

15 मई से 25 मई, 1999 तक ऑपरेशन विजय सैन्य अभियान की योजना बनाई गई,उनके हमले वाले स्थानों पर सैनिक, तोपखाने और अन्य उपकरण भी भेजे गए और जो उपकरण आवश्यक थे, वे भी खरीदे गए। अब, भारतीय सैनिक विमान और हेलीकॉप्टरों द्वारा प्रदान किए गए हवाई कवर के साथ कब्जे वाले पाकिस्तानी ठिकानों की ओर बढ़ गए।

युद्ध में तोपखाने की गोलाबारी के उपयोग के इतिहास में एक अनोखी गाथा शुरू हुई। कारगिल और द्रास के सामान्य क्षेत्रों में, पाकिस्तान ने सीमा पार से तोपखाने की गोलीबारी का सहारा लिया।

13 जून, 1999 को, द्रास उप-क्षेत्र में टोलोलिंग पर गिरने वाली पहली बड़ी पर्वतमाला थी, जिस पर कई हफ्तों की लड़ाई के बाद कब्जा कर लिया गया था। इन हमलों के परिणामस्वरूप एक सौ से अधिक तोपखाने बंदूकों, मोर्टारों और रॉकेट लांचरों से लगातार गोलीबारी की गई। हजारों गोले, बम और रॉकेट हथियारों ने कहर बरपाया। 4-5 जुलाई, 1999 को, टाइगर हिल और प्वाइंट 4875 पर तथा 7 जुलाई, 1999 को, मश्कोह घाटी पर पुनः कब्जा कर लिया गया। टाइगर हिल पर लगभग 12,000 राउंड उच्च विस्फोटकों की बारिश हुई और बड़े पैमाने पर तबाही और मौतें हुईं? सीधी लड़ाई में 122 मिमी ग्रैड मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर (एमबीआरएल) कार्यरत थे।

बटालिक सेक्टर का इलाका बहुत कठिन था और दुश्मन कहीं अधिक मजबूती से जमा हुआ था। उच्च ऊंचाई पर आर्टिलरी ऑब्जर्वेशन पोस्ट (ओपी) स्थापित करके दिन-रात लगातार दुश्मन पर आर्टिलरी फायर किए गए, जिससे उन्हें कोई आराम नहीं मिला। 21 जून, 1999 को पॉइंट 5203 पर पुनः कब्ज़ा कर लिया गया और 6 जुलाई, 1999 को खालुबार पर भी पुनः कब्ज़ा कर लिया गया। अगले कुछ हफ्तों के भीतर, बटालिक उप-क्षेत्र में शेष पाकिस्तानी चौकियों पर और हमले किए गए। एक बार फिर, आर्टिलरी ने दुश्मन की बटालियन और रसद बुनियादी ढांचे को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कारगिल संघर्ष के दौरान भारतीय तोपखाने ने 2,50,000 से अधिक गोले, बम और रॉकेट दागे थे जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से दुनिया में कहीं भी इतनी आर्टिलरी फायर नहीं देखी गई थी।

कारगिल युद्ध में भारतीय वायु सेना

26 मई को, युद्ध में वायु सेना ने संघर्ष की प्रकृति और पूर्वानुमान कर अनुकरणीय बदलाव किया। ऑपरेशन सफेद सागर में, वायु सेना ने 50 से अधिक दिनों के ऑपरेशन में सभी प्रकार की लगभग 5000 उड़ानें भरीं। अनुकूल परिस्थितियों में लड़ाकू हेलीकाप्टरों की संचालन में एक निश्चित उपयोगिता होती है, लेकिन गहन युद्धक्षेत्र में वे अत्यधिक जोखिम में होते हैं।

कारगिल क्षेत्र समुद्र तल से लगभग 16,000 से 18,000 फीट ऊपर है और विमान को लगभग 20,000 फीट की ऊंचाई पर उड़ान भरना होता था। इन ऊंचाइयों पर हवा का घनत्व समुद्र तल की तुलना में 30 प्रतिशत कम होता है इससे उठाए जाने वाले वजन में कमी आई और पैंतरेबाज़ी करने की क्षमता भी कम हो गई । फायरिंग सटीक नहीं हो सकती थी। पहाड़ों में लक्ष्य अपेक्षाकृत छोटे व फैले हुए होते हैं और मुख्य रूप से उच्च गति वाले जेट विमानों के पायलटों द्वारा उन्हें देखना भी मुश्किल होता था।

जमीनी हमले के लिए जिन विमानों का इस्तेमाल किया गया उनमें मिग-2आई, मिग-23एस, मिग-27एस, जगुआर और मिराज-2000 शामिल किया गया।

इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, टोही और जमीनी हमले के लिए अत्याधुनिक मिराज-2000 का इस्तेमाल किया गया।

सटीकता के साथ, इस फाइटर ने घातक प्रभाव वाले फ्री-फॉल बम और लेजर-निर्देशित बम का प्रयोग किया तथा टाइगर हिल और मुंथो ढालो की चोटियों पर बने पाकिस्तानी बंकरों को भारी तबाही पहुंचाई।

इसके अलावा, MI-17 को हवा से जमीन पर मार करने वाले रॉकेट के साथ 4 रॉकेट पॉड ले जाने के लिए संशोधित किया गया था और यह पाकिस्तानी बंकरों और सैनिकों को उलझाने में प्रभावी साबित हुआ। वायु सेना के लिए नियंत्रण रेखा (एलओसी) को पाकिस्तान की ओर पार नहीं करने पर प्रतिबंध था। अन्यथा, भारतीय वायु सेना पाकिस्तान की आपूर्ति लाइनों को नष्ट कर देती या एलओसी के पार रसद अड्डों को भी नष्ट कर देती। भारतीय सेना ने तेजी से और कम नुकसान के साथ अपना अभियान चलाया।

अनुमान है कि ऑपरेशन विजय में अकेले हवाई कार्रवाई से लगभग 700 घुसपैठिये मारे गये।

कारगिल युद्धः भारतीय नौसेना संचालन

'ऑपरेशन तलवार' के तहत, 'पूर्वी बेड़ा', 'पश्चिमी नौसेना बेड़े' में शामिल होकर पाकिस्तान की अरब सागर में शक्तिशाली नाकाबंदी कर दबाव बनाया।

भारतीय सेनाओं के अदम्य साहस और वायुसेना की निरन्तर गोलाबारी से पाक घुसपैठियों को अत्यधिक हानि पहुँचाई। आखिरकार शेष बचे घुसपैठियें डरकर कारगिल की चोटियों से भाग गये। अनेक युवा भारतीय सैनिक व सैन्य अधिकारियों के अदम्य साहस की शहादत को देश भूल नहीं पायेगा।

इसलिए, पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध में जीत की याद में हर साल 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है।

श्री क्षत्रिय कुमावत समाज विवाह समिति के चुनाव सम्पन्न

1 जुलाई, 2023 को श्री क्षत्रिय कुमावत समाज विवाह समिति त्रिवेणी धाम (साईवाड़) के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। जिसमें अध्यक्ष अशोक कुमार मारवाल पावटा निर्वाचित हुए। अध्यक्ष अशोक कुमार मारवाल पावटा ने 17 जुलाई 23 सोमवती अमावस्या को महाराज श्री खोजीद्वाराचार्य श्री श्री 1008 श्री रामरिछपालदास जी का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर आशीर्वाद लिया। महाराज श्री ने अध्यक्ष को आशीर्वाद देकर खुशी जाहिर की एवं अध्यक्ष को निष्पक्ष बिना भेदभाव के सभी कार्यकारिणी सदस्यों का सहयोग लेकर काम करने की सलाह दी। इसी दिन अध्यक्ष ने समाजबन्धु एवं कार्यकारिणी को पंगतप्रसादी (गोठ) करवाई।

अध्यक्ष की सहमति से नई कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार से किया गया-

अध्यक्ष अशोक कुमार मारवाल पावटा, **उपाध्यक्ष** कालूराम थांवल्या, मातादीन मारोठिया, **महामंत्री** मनफूल ब्याड़वाल, **कोषाध्यक्ष** मोहन लाल कलाकार (बासनीवाल), **सचिव** अमरचन्द बबेरवाल, **संरक्षक** रामकुंवार मारोठिया, रामकिशोर घोड़ेला, बंशीधर मारोठिया, गिरधारी लाल मारवाल, गंगाराम मारोठिया, हीरालाल बबेरवाल चन्दबाजी, राजेश कुमार बिंवाल, **मुख्य संरक्षक** नारायण प्रसाद दम्बीवाल खण्डेला, दमनप्रवासी, डॉ. सीताराम तून्दवाल, रमेश चन्द, मोतीलाल,राजेन्द्र प्रसाद, कृष्ण कुमार, मुरारीलाल कोलकरिया, विमल कुमार बारावाल चौमूं, **सलाहकार मंत्री** रामस्वरूप, अशोक कुमार, जगदीश प्रसाद जलान्द्रा, रामकुंमार जलान्द्रा अणतपुरा, महावीर प्रसाद खोवाल, रूपनारायण एडवोकेट, रामेश्वर प्रसाद एडवोकेट, अशोक कुमार अलवर, **संगठन मंत्री** जयप्रकाश तून्दवाल, कैलाश चन्द ब्याड़वाल, ओमप्रकाश मारवाल, शिम्भुदयाल मारोठिया, भूदरमल अनावड़िया, भगवान सहाय मारोठिया, सुभाषचन्द, राकेश कुमार तून्दवाल, बंशीधर लोट्या, बिरदीचन्द दम्बीवाल, हरिश्चन्द बासनीवाल, **प्रचारमंत्री** महेश कुमार जलान्द्रा, दिनेश बासनीवाल, राधाकृष्ण तुन्दवाल, देवेन्द्र घोड़ेला, अशोक कुमार मारोठिया, मदनलाल जलान्द्रा,राधेश्याम लोहरवाड़िया, **व्यवस्थापक** हरनाथ बबेरवाल, कैलाश मिस्त्री, कालूराम बबेरवाल, सांवरमल (नायन), **संयोजक** श्यामलाल, गौरीशंकर, जगदीश प्रसाद तून्दवाल बहरोड़, ओमप्रकाश शाहजहांपुर, जयकिशन केशरमल शोकिल **प्रवक्ता** जगदीश प्रसाद मारोठिया (गुरुजी) मालीराम कारीगर।

भूल सुधार

जून 2023 की पत्रिका के पेज 13 पर मानहानि की न्यूज में 'स्वर्गीय श्री मालीराम कच्छावा' के स्थान पर 'स्वर्गीय श्री मांगीलाल कच्छावा' पढा जावे।

विशिष्ट संरक्षक

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज घुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरस्वा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यवेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोठिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार चोडीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरमल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, बैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोठिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण चोडीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर
वि/20 श्री ओमकार मल चोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बैरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल चोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम झोदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, जोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोरिया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (चोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान बेवारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल चोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, घुसुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र चूनवाल टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुकरवालिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीयाराम दम्मीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल बेवारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नानकीलाल कुड्डीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम बासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल घुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश घुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण सांगडा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित घुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर ब्यासीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल घुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैवाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद मामोड़िया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुम्भावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मेंडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद कापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुम्भावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार बालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार चोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैवाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाला, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, डोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर कम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री सतेन्द्र सिंह, खिरनी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर

"कुमावत इंडिया" पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

16 जून श्री रामलाल चोड़ेला, गजसिंहपुरा, जयपुर
18 जून श्री बाबूलाल भौरोदिया ठेकेदार, भांकरोटा, जयपुर
18 जून श्री रामेश्वर लाल खोराणिया, झोटवाड़ा, जयपुर
19 जून श्री विकास बाबूलाल मिरड़ी विद्याधर नगर
19 जून श्रीमती गीता देवी पत्नी श्री राधेश्याम मारवाल, कमला नेहरू नगर, जयपुर
19 जून श्री नाथूलाल भातरा रींगस सीकर
20 जून श्री प्रकाश चन्द बालोदिया (मुन्नाजी) स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर
20 जून श्री पुरुषोत्तम भातरा विनायक सीटी सिरसी रोड, झोटवाड़ा
21 जून श्री मूलचन्द बबेरीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
21 जून श्री चिरंजी लाल मारवाल एयरपोर्ट के सामने, सांगानेर, जयपुर
21 जून श्री दुर्गा प्रसाद नागौरा कुमावतों का मोहल्ला, किशनगढ़ शहर, अजमेर
22 जून श्रीमती सुमनलता (शशि) धर्मपत्नी श्री रमेश चन्द खोराणिया, जयपुर
23 जून श्रीमती बाछीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री नंछीलाल मारवाल, करतारपुरा, जयपुर
23 जून श्री भगवान सहाय सिरस्वा मेकीमाई की कोठी, कालाडेरा, जयपुर
24 जून श्री दिशांक पुत्र स्व. श्री रामानन्द जलान्धरा, शिल्पकॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर
24 जून श्री बाबूलाल खंडारिया, शिव कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़
25 जून श्रीमती चौथी देवी धर्मपत्नी शिवदयाल धुंधारिया, ग्रीन सीटी, सीकर रोड, जयपुर
26 जून श्रीमती दौलत देवी धर्मपत्नी स्व. श्री हनुमान सहाय बघानिया, झोटवाड़ा, जयपुर
26 जून श्रीमती बेनी वर्मा धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचन्द बबेरवाल, पांच्यावाला, जयपुर
27 जून श्रीमती मोता देवी धर्मपत्नी स्व श्री सुखदेव राठोरिया, बरकत नगर, जयपुर
29 जून श्री हरिशंकर खोराणिया डेहर के बालाजी, सीकर रोड, जयपुर
1 जुलाई श्री छुट्टनलाल बैरा हरमाड़ा, जयपुर
1 जुलाई श्री मदनलाल सिरस्वा विद्याधर नगर, जयपुर
3 जुलाई श्रीमती सुशीला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री हनुमान सहाय तारकसी, जयपुर
3 जुलाई श्री रामस्वरूप पैड़दिया पुत्र श्री गणेश लाल सिलोरा, किशनगढ़, अजमेर
3 जुलाई श्रीमती रेखा धर्मपत्नी स्व. श्री रमेश जी गोठवाल भोपालवाड़ी
4 जुलाई श्रीमती जुगलीदेवी धर्मपत्नी श्री सुरेश अजमेरा, ब्यावर, अजमेर
6 जुलाई श्री चन्द प्रकाश वर्मा (खड़गटा) जयजवान कॉलोनी, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
अक्षय	M.Com/MBA	Assi. Manager AV Bank	20.8.94	5'8''	रेवाड़िया	सिरस्वा	खोवाल	मामोडिया	9001240928	चौमूं
संजय	B.Com.	Auto Parts	7.8.98	5'8''	मोरवाल	अनावड़िया	मारवाल	गैदर	9929204452	जयपुर
जयप्रकाश	M.A, ITI, DTP	Telecom Line	13.1.94	5'5''	राजोरा	राहोरिया	मारोठिया	बेडवाल	9462660949	जयपुर
हर्ष	BCA, MCA.	Soft. Eng.	13.2.95	5'6''	कुदीवाल	किरोड़ीवाल	मामोडिया	जलान्दरा	8875666976	जयपुर
भूपेन्द्र	M.Com., Hotel Management, Chef		14.7.92	5'8''	राहोरिया	सिरस्वा	बारावाल	बालोदिया	9929927537	जयपुर
पवन	BCA	Graphic Designer	31.5.93	6'0''	बालोदिया	कुण्डलवाल	सिंघाठिया	खटवाल	7014965032	जयपुर
हितेश	M.A.	Tainor	11.8.96	5'8''	आसीवाल	दोराया	बबेरीवाल	मारवाल	8233768099	सांगानेर
श्रीकान्त	B. Pharma	MNC Company	8.3.96	5'9''	बेडवाल	देवतवाल	मारवाल	गैदा	9950442569	जयपुर
किशन	M.Tech. IIT	XEN, NTPC	24.6.98	5'10''	बेडवाल	जलान्दरा	मारवाल	खण्डारिया	9602642503	जयपुर
हेमराज	P-6	Govt. Lecturer	13.11.88	5'11''	बम्बोरिया	अनावड़िया	बधानिया	खाटूवाल	7891885794	अजमेर
सुनील	B.Tech. (IT)	System Admin	4.11.93	6'1''	राहोरिया	जूनवाल	बालोदिया	बासनीवाल	7877099792	जयपुर
अक्षय	B.Com., C.A.	Assist Manager in MNC	6.8.96	5'9''	राहोरिया	लोहरवाडिया	बारावाल	मारोठिया	9079660150	जयपुर
यश	B.com. Deploma	Pvt. Job	27.1.95	5'9''	मामोड़िया	कुदीवाल	वासनीवाल	दम्बीवाल	8233333376	देहली
सचिन	B.Sc.	Station Master (Rly)	19.11.96	6'0''	सारड़ीवाल	धुंधारिया	घोड़ेला	काम्या	9829285344	जयपुर
रजत	B.A.,ITI	Service in Ltd. Comp.	15.9.99	5'7''	कुदाल	जलांधरा	आसीवाल	किरोड़ीवाल	869679042	फुलेरा
अनिरूद्ध	B.Tech (Mech).	-	13.11.96	5'8''	मारोठिया	सिरोहिया	कुण्डलवाल	लाम्बा	9828106125	जयपुर
सुमित	M.Com., CA	Audit Manager	21.12.92	5'7''	भोरोदिया	मारोठिया	धुंधारिया	तांगड़ा	9001904969	जयपुर
गौरव	B.Tech. (IT)	Asst.Account officer(GOI)	24.1.93	5'6''	आईथान	सोकिल	घोड़ेला	सिरस्वा	9887695665	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
भारती	M.A.,B,Ped.	Pvt. School Teacher	29.9.94	5'5''	घोड़ेला	सिरस्वा	खण्डारिया	नीमीवाल	9414779718	जयपुर
ज्याती	B.Tech(ECE)	Auditor	10.2.94	5'5''	घोड़ेला	भोड्या	जालवाल	मारोठिया	9958880113	जयपुर
दिव्या	B.Tech. (CS)	Pvt. Job.	29.6.91	5'3''	भौरोदिया	छाबल्या	खूखवाल	खटवाल	8947992776	जयपुर
वर्षा	ITI Diploma	Job	20.8.98	5'4''	होदकास्या	भयूण्डया	निरानिया	मालिया	7690033293	नसीराबाद
अंशु	B.A., Artist	Pvt. Job.	1.9.97	-	मारवाल	जलान्दरा	कुदीवाल	किरोड़ीवाल	9829059853	जयपुर
नन्दनी	MA (Econo.)	-	14.6.2000	5'8''	किरोड़ीवाल	जेठीवाल	देवतवाल	काम्या	9414314380	फुलेरा
खूशबू	MA (Running)	-	6.1.2002	5'5''	मारवाल	बासनीवाल	घोड़ेला	किरोड़ीवाल	9413677353	फुलेरा
किरण(तलाकशुदा)	M.A.. B.Ed.	-	15.5.85	5'3''	घोड़ेला	जायलवाल	देहीवाल	मारवाल	8107761866	सीकर
अमीषा	B.A.	Beautician	8.1.98	5'3''	बड़ीवाल	राहोरिया	मारवाल	गुडीवाल	9799414150	जयपुर
लविका	M.Sc. B.Ed.	Teacher	6.3.95	5'1''	खूंखवाल	बेरा	कुलचानिया	भोरोदिया	9414315055	स.माधोपुर
नेहा(मांगलिक)	B.Arch	Architect	5.9.99	5'7''	मारोठिया	गैदर	सिरस्वा	अनावड़िया	9314529497	जयपुर
प्रियंका(मांगलिक)	BCA	Pvt Service	अगस्त, 90	5'0''	सिरस्वा	बारावाल	आसीवाल	बेड़वाल	8794837800	नागौर
धनेश्वरी	B.A., B.Ed.	Pvt. Teacher	24.5.89	-	मावर	रेनीवाल	घोड़ेला	पारमवाल	9672762650	मारवाड़
वापिका	MCA	Pvt. job	28.6.92	5'0''	मारवाल	जलान्दरा	जेठीवाल	बोडिया	9351708090	जयपुर
सुनीता	GNM	Nursing officer (Central)	15.3.93	5'4''	माचीवाल	आसीवाल	मारोठिया	बेडवाल	7850800348	सीकर
अनुभा	M.Com.	-	25.3.93	5'2''	बालोदिया	बबेरीवाल	अजमेरा	कारगवाल	9414250972	जयपुर
शारदा	M.A., GNM	Govt Job	1992	-	कुण्डलवाल	दम्बीवाल	होदकास्या	बडबूण्डी	9001956606	जयपुर
प्रिया	B.Sc.(Nursing)	Nursing officer AIIMS	22.12.95	-	दौराया	सिरोडिया	खोवाल	तूंदवाल	9950603773	चाकसू
भारती	M.A.	Teaching	5.10.93	5'3''	गैदर	खैरातिया	मारवाल	घोड़ेला	9887689010	जयपुर
उजला	M.Com.	Clerk in Court	17.4.95	5'4''	मामोड़िया	राहोरिया	तूंदवाल	भौंरोदिया	9636910624	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है। नवीनतम अपेडेट जानकारी हेतु कृपया व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

सदस्यता समाप्ति सूचना

3 वर्षीय सदस्यता वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टें को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश मंत्री डॉ. महेन्द्र कुमावत का भव्य स्वागत

भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश मंत्री डा. महेंद्र कुमावत के प्रदेश मंत्री बनने पर प्रथम बार गुलाबी नगरी आगमन पर टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक व भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष श्री चेतन कुमावत के निर्माण नगर जयपुर स्थित निवास पर माला, साफा, दुपट्टा पहनाकर राजस्थानी परम्परानुसार भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर अनेक भाजपा पदाधिकारी व समाजबंधु मौजूद रहे।

स्वागत से अभिभूत प्रदेश मंत्री डा. महेन्द्र कुमावत ने टीम चेतन धुंधारिया का आभार व्यक्त किया। प्रदेश शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझ जैसे साधारण कार्यकर्ता को शीर्ष नेतृत्व ने इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। भारतीय जनता पार्टी सबका साथ सबका विकास की अवधारणा को लेकर चलती है। सबको उनकी योग्यता अनुसार अवसर उपलब्ध है। गरीब हो, मध्यम वर्ग हो या उच्च वर्ग भाजपा हर तबके के हित को लेकर चिंतित रहती है।

टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक व ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत ने कहा कि डा. महेन्द्र कुमावत प्रदेश की टीम में पहुंचे है यह हम सब के लिए खुशी का पल है। हमे पूरी उम्मीद है कि नवनियुक्त प्रदेश मंत्री भाजपा को और अधिक मजबूती प्रदान करेंगे। गुजरात भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य (भाषा भाषी सेल) कैलाश घोडावड ने भी पुष्पगुच्छ देकर डॉ. कुमावत का स्वागत किया गया। घोडावड ने कहा कि जो लोग कल तक हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान से दूरी बनाकर रहते थे अब उन लोगों में हिंदू संस्कृति और हिंदुस्तानी दिखाने की होड़ मची है। इस अवसर अनेक भाजपा पदाधिकारी व समाजबंधु मौजूद रहे।

Premiere Institute of Hotel Management

Puri, Odisha.

Affiliated To Utkal University of Culture.

Admission Open...

- Bachelor in Hotel Management (60 seat) & Master in Hotel Management (15 seat)
- Course Fees 41500/-..per year
- Hostel Fees- 4500/- per month
- Contact - 8763483627
(Special Offer for SC & ST students...)

For Girls course fee is **15000/-** per year

विज्ञापन

PG Diploma in Hotel Management

1yr Diploma in Hotel Management

All course fees... 41500/- per year

(OR 21000/- per semester)

Web site- www.pihmt.com

वैवाहिक

Ujla Kumawat (Tannu)

Date of Birth : 17/04/1995
Birth Place : Jaipur
Educational Qualification: Post Graduate (M.Com)
Height : 5.4" **Complexion** : Fair
Family Details:
Father's Name : Niranjan Kumar Kumawat
Gotra : Mamodiya
Profession : Retired assistant office superintendent (Medical Dept.)
Contact No. : 9636910624
Address : 200, Deep Vihar Colony, Panchyawala, Sirsi Road, Jaipur
Mother's Name : Vandana Kumawat
Gotra : Rahoriya
Siblings : Aanchal Kumawat (Married)
Paternal Grandmother's Gotra: toondwal
Maternal Grandmother's Gotra: bhorodiya
Profession : Clerk GradeII (District & Session Court, Jaipur)

विज्ञापन

चार्टेड अकाउंटेंट (CA) बनने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

जयश्री खोरानिया

दीपक गोठवाल

लीला कुमावत

विकास कुमावत

NEET में चयनित होने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

रिंकू कुमावत

हंशु कुमावत

रौनक कुमावत

पूजा कुमावत,

कृष्ण कुमावत

अमित नागा

12वीं एवं 10वीं कक्षा के प्रतिभावान विद्यार्थियों को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

क्रिश जौहरी
12वीं 81.80

ख्वाहिश कुमावत
12वीं 94.50

रिया कुमावत
12वीं 88.00

जिया कुमावत
10वीं 90.00

बोराज के सुरेश कुमावत को कृषि विषय में डॉक्टरेट की उपाधि

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर सुरेश कुमावत पुत्र श्री सीता राम कुमावत ने डॉ. एस. आर. यादव, आचार्य (मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन), क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, बीकानेर कृषि अनुसन्धान केंद्र, के सानिध्य में **'टोर्रिप्समेंट्स मृदा में जैविक स्त्रोतों का लहसुन उत्पादन के तहत पोषक तत्वों की गतिशीलता और मृदा स्वास्थ्य पर प्रभाव'** विषय में विद्यावाचस्पति का शोध कार्य करके Ph.D की है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री महेश कुमावत को पीएचडी की उपाधि

श्री महेश कुमावत ने राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रोफेसर रंजना जैन के सानिध्य में **आर्थिक उदारीकरण के परिपेक्ष्य में पंचायती राज्य संस्थाओं की परिवर्तित भूमिका का अध्ययन राजस्थान के विशेष संदर्भ में** विषय में शोध कार्य करके Ph.D की है। **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

सर्वकुमावत क्षत्रिय महासभा के पदाधिकारियों की नियुक्ति पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की बधाई

श्रीमती सावित्री सोकल
अध्यक्ष, जयपुर शहर महिला मोर्चा

श्री सत्यनारायण मारवाल
अध्यक्ष, विद्याधर नगर इकाई

श्री रामावतार अनावड़िया
अध्यक्ष, झोटवाड़ा इकाई

श्री अनन्त कारगवाल
राष्ट्रीय सलाहकार

श्री चेतन बालोदिया ट्रस्टी के सूरत प्रवास पर उन्होंने गणमान्य समाजबंधुओं को **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका भेंट की। इस पत्रिका की क्वालिटी व प्रकाशित सामग्री की सभी ने प्रशंसा की। साथ ही कुछ लोगों ने पत्रिका की सदस्यता देने की पेशकश की।

सालासर में हनुमान जी की 51 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित

सिद्धपीठ सालासर बालाजी धाम स्थित श्री बालाजी गौशाला के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 18-26 जुलाई तक 9 दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान व रामकथा का आयोजन रखा गया है। इस अवसर पर गौशाला में मूर्तिकार नरेश कुमावत द्वारा निर्मित हनुमानजी की 51 फीट ऊँची मूर्ति का अनावरण रखा गया। जमीन से इसकी कुल ऊँचाई 78 फिट होगी। हनुमानजी की सिंदूरी रंग की किशोरावस्था में हाथ जोड़े मूर्ति बनाई गई है जो भारत में स्थापित होने वाली प्रथम प्रतिमा है।

हनुमानजी की प्रतिमा की स्थापना भक्त स्व. श्रीमती दर्शनादेवी (धर्मपत्नी श्री मातुराम वर्मा) की पुण्य स्मृति में उनकी सन्तान सुशीलकुमार, नरेशकुमार, अनीता कुमावत निवासी पिलानी द्वारा 18 जुलाई, 2023 को करायी गयी।

श्रद्धांजलि

श्री विरंजीलाल मारवाल (कुमावत)
(Retd. MNIT)
विद्याधर

आपका स्नेहभरा, सरल, सादगीपूर्ण व्यवहार, कठोर परिश्रम, रचनात्मक व्यक्तित्व हमारे पथ प्रदर्शन में सदैव प्रेरणादायक रहेगा। हम सभी परिवारजन आपको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावन्त

धर्मपत्नी : श्रीमती कैलाश देवी कुमावत **पुत्री-दामाद :** स्व. बबली (प्रेम)-मोहनलाल खोरानिया, सीमा-राजकुमार पालड़ीवाल (कुमावत), अनीता-राजेश आसीवाल (कुमावत) **पुत्री :** विजयलक्ष्मी कुमावत **दोहित्र-दोहित्र वधु :** नितिश-दिक्षप्रिया, अभिषेक, सुयोग, दक्ष, पवित्रम, **दोहित्री-दोहित्री दामाद :** मेघा-चिराग एवं समस्त परिवारजन एवं मित्रमण्डल **M.: 9660013358, 8875001482**

217, पार्श्वनाथ नगर, सांगानेर एयरपोर्ट, जयपुर-302011

भजन लाल बालोदिया
जिला परिषद सदस्य, जयपुर
M. : 98290 10474

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

MARUTI
HOME
DECOR

प्रमेन्द्र बालोदिया
मारूति बिल्डर्स, चित्रकूट
M. : 9829367654

प्लाट नं. 155, रजनी विहार, अजमेर रोड, जयपुर
+91 8955888893, 9785678828, 8824492736

श्रीमती मन्नी देवी

स्वतंत्रता दिवस व दीपिका (पुत्रवधू) के जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुभाष कुमावत-सुमनलता

दीपेन्द्र-नीलम, युवी एवं रुश्वी

भूपेन्द्र-दीपिका, तेजस, दिया

ए-95, जेडीए कॉलोनी, केलगिरी अस्पताल के सामने, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9414382318

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :

1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018